जून 2016

दादावाणी

कीमत ₹ 10

संस्कार का तो ऐसा है, कि अगर गुलाब का बीज होगा तो गुलाब ही उगेगा। सिर्फ उसे मिट्टी-पानी और खाद की जरूरत है। उसका विकास होने दो ! अतः इस घर रूपी बगीचे को पहचानने की जरूरत है।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : 11 अंक : 8
अखंड क्रमांक : 128
जून 2016

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 36 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

बच्चों के पालनहार बनो, मालिक नहीं

संपादकीय

हर एक माता-पिता की यह तीव्र इच्छा होती है कि उनकी संतान संस्कारी बने। यह अच्छी बात है लेकिन उसे सार्थक करने के लिए उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि वे खुद कितने आदर्श व संस्कारी माता-पिता हैं? संतान को संस्कारी बनाने के लिए सर्वप्रथम जो आपको पसंद नहीं हो, वैसा आप बच्चे के सामने न करो जैसे कि उनकी उपस्थिति में गुस्सा करना, डाँटना, दलीलें करना, ऐसा सब न करो। वह हमारे जैसे संस्कार देखेगा, वैसा ही करेगा। घर की भिन्न-भिन्न प्रकृतियों को पहचानकर अगर माली बनना आ जाए तो बगीचा कैसा खिल उठेगा? बच्चा अगर व्यवहार में उसे परेशान करनेवाले प्रश्न पूछने आए तो उसे रोको मत। उसके मन को खुलने दे। उसकी बात ध्यान से सुनें, उससे हकारात्मक असर होगा।

एक व्यक्ति को यह देखना था कि कोश में से पतंगा कैसे बनता है। कुछ दिनों बाद कोश के एक छिद्र में से पतंगा अपना शरीर बाहर निकालने के लिए संघर्ष कर रहा था। बाहर निकलने के लिए बहुत देर तक पतंगा को मेहनत करते हुए देखकर उस व्यक्ति को दया आ गई। उसने कोश को संभालकर काटा और पतंगा को बाहर निकाला। लेकिन पतंगा का शरीर बहुत कमज़ोर था, इसलिए वह उड़ नहीं पाया। कुम्हलाए हुए पंखों से ज़मीन पर घिसटने लगा। दयावृत्ति के कारण वह व्यक्ति समझ नहीं पाया कि छोटे से छिद्र से बाहर आने के लिए पतंगे को संघर्ष करना ज़रूरी था। उस संघर्ष के दौरान उसके शरीर से जो द्रव पंखों की ओर जाता है, उससे उसे शक्ति मिलती है और उसमें उड़ने की क्षमता आती है लेकिन उस व्यक्ति की मदद ने जीवनभर के लिए उसे पंगु बना दिया। याद रखो कि बच्चे की ज़रूरत से ज़्यादा देखभाल करने से वह पंगु बन सकता है। थोड़ा-बहुत अवरोध, संघर्ष बच्चे में रही प्रतिभा को विकसित करने में आशीर्वाद समान होता है। विपरीत संयोगों में ही बच्चा नया मार्ग बनाकर सफलता के शिखर चढ़ता है।

माँ-बाप के व्यवहार से बच्चा बहुत कुछ सीखता है। कहाँ किफायत करनी, कहाँ एन्करेज(प्रोत्साहित) करना, कहाँ डिस्करेज (रोकना) करना, उसका बेलेन्स अगर माँ-बाप की समझ में आ जाए, तो बच्चा बिगड़ेगा नहीं। इतना याद रखो कि आज का ओवरवाइज़ व्यवहार उसका आनेवाला कल बिगाड़ देगा। नॉर्मेलिटी का व्यवहार बच्चे का आनेवाला कल सुधार देगा। इसलिए बच्चे को पढ़ाई, समझ और गढ़न तीनों देना ज़रूरी है।

प्रस्तुत अंक में माँ-बाप की अनेक परेशानियों का हल मिलता है लेकिन साथ ही उन्हें अपने जीवन में खुद को सुधारने की चाबियाँ भी मिलती हैं। इस संसार के रिलेटिव संबंधों का मूल्य समझकर, मूर्च्छा उड़ाकर जागृति बढ़े और व्यवहार सुखमय रूप से पूर्ण हो, उसके लिए दादाश्री की बोधकला और ज्ञानकला बहुत उपयोगी हैं जो साधारण व्यक्ति को भी व्यवहार की परेशानियों से बाहर निकालकर ज्ञान के सहारे मोक्ष की सीढ़ियाँ चढ़ाती हैं।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

बच्चों के पालनहार बनो, मालिक नहीं

विकसित करो ऐसा नैतिक चरित्र

प्रश्नकर्ता : फादर (पिता) का चरित्र कैसा होना चाहिए?

दादाश्री : बच्चे को पापा जी के बिना अच्छा न लगे। बच्चे रोज़ कहें कि 'पापा जी, हमें बाहर अच्छा नहीं लगता, आपके साथ ही अच्छा लगता है।' ऐसा चरित्र होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा बनने के लिए क्या करना चाहिए पापा को?

दादाश्री : अब मुझसे जो बच्चे मिलते हैं न, तो उन बच्चों को मेरे बिना अच्छा नहीं लगता। जो बुज़ुर्ग मिलते हैं, उन बुज़ुर्गों को भी मेरे बिना अच्छा नहीं लगता। जो युवा मिलते हैं, उन युवाओं को भी मेरे बिना अच्छा नहीं लगता।

प्रश्नकर्ता : हमें आप जैसा ही बनना है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन आप अगर मेरे जैसा करोगे तो वैसा हो जाओगे। अगर हम कहें, 'पेप्सी ले आओ।' तो कहेगा, 'नहीं है।' तब भी कोई हर्ज नहीं, पानी ले आओ। जबकि ये तो कहेंगे, 'क्यों लाकर नहीं रखी?' वह दखल की फिर। दोपहर के खाने का टाइम हो जाए और अगर हमसे कहें, 'आज तो खाना नहीं बनाया है।' मैं कहूँगा कि 'भई, ठीक है, अच्छा किया। लाओ ज़रा पानी-वानी पी लें बस।' 'आपने क्यों नहीं बनाया?' ऐसे में वह फौजदार बन जाता है वहाँ।'

ये तो यों ही बाप बन गए। ऐसा बाप बनना चाहिए कि बेटा हमसे दूर न जाए। अगर मैं उसे दादा मानता हूँ, इसलिए वह मेरे पास बैठने के बाद हटता नहीं है। यानी सारी कलाएँ आनी चाहिए।

चिमटा रखकर, सुलझाओ उलझन युक्ति से

प्रश्नकर्ता : घर में बच्चों की ज़िम्मेदारी हमारी है। अगर उसका कोई बुरा बरताव हो, और हम उसे सुधारने के लिए कुछ कहें, उसका अच्छा करने के लिए उससे कहें, तो वह हम पर ही उलटा पड़ता है। वे समझते हैं कि 'इस घर में ये मेरे बुज़ुर्ग हैं। मेरे अच्छे के लिए कह रहे हैं, मुझे सुधारने के लिए कह रहे हैं।' फिर भी हम जब कहते हैं तब हमारे प्रति उनका बरताव उल्टा ही हो जाता है।

दादाश्री : वह इसलिए कि हमें कहना नहीं आता। सामनेवाले व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है। हमें कहना नहीं आता, तो फिर ऐसा होगा न! ऐसे बोलते हो जैसे कि आप कलेक्टर हों, तब फिर ऐसा ही होगा न! आप क्लर्क की तरह बोलोगे, तो उसे अच्छा लगेगा, तब वह बात को सुनेगा, आपको क्या लगता है? कलेक्टर की तरह कहोगे तो फिर परेशानी ही होगी न! अगर हम अंगारे को छूएँ और उसे पहचान लें कि ये छूने

जैसा है ही नहीं, तो फिर क्या हमें उसे फिरसे छूना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं छूना चाहिए।

दादाश्री : अंगारे के लिए क्या करते हैं? चिमटे से पकड़ते हैं न? चिमटा रखते हो न आप? चिमटा नहीं रखते? अगर अंगारे को हाथ से यों ही पकड़ने जाएँगे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : जल ही जाएँगे।

दादाश्री : इसलिए चिमटा रखना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : तो कैसा चिमटा रखना चाहिए?

दादाश्री : अपने घर में एक व्यक्ति चिमटे जैसा है। वह खुद नहीं जलता बल्कि जलनेवाले को पकड़ता है। उसे बुलाकर कहना कि, 'भाई, मैं जब इसके साथ बात करूँ न, तब तू भी हाँ में हाँ मिलाना।' तो फिर वह सब ठीक कर देगा। कुछ उपाय करना पड़ता है। यों ही हाथ से अंगारे छूने जाएँगे तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है। लेकिन मेरे साथ गलत बरताव करने के बाद उसे दु:ख होता है कि 'मैंने गलत किया।' 'ये घर के बड़े हैं और उन्हें मुझ पर प्रेम है इसलिए वे मुझे सुधारना चाहते हैं,' वह ऐसा समझता है, फिर भी उसका बरताव तो वैसे का वैसा ही रहता है।

दादाश्री : हाँ, ऐसा भी समझता है कि 'प्रेम है और हित की बात कर रहे हैं,' लेकिन उसे ऐसा क्यों कहते हो कि 'तुझ में अक्ल नहीं है?' हम तो प्रेम से कहते हैं तो प्रेम बढ़ाओ न! इतने अच्छे, समझदार होकर...

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कैसे हो जाता है? मैं उससे कुछ कहूँ तो वह गुस्सा हो जाता है, इसलिए मैं भी गुस्सा हो जाता हूँ।

दादाश्री : वही तो, गुस्सा हो जाते हो। जब तक कमज़ोरी हो तब क्या कर सकते हैं? मुझसे तो अगर कोई कहे कि, 'दादाजी, आपमें अक्ल नहीं है।' तो मैं कहूँगा, 'बैठो, तुम्हारी बात ठीक है।' क्योंकि उसमें समझ नहीं है तभी ऐसा बोलेगा न! और फिर पछताएगा भी। वह कहेगा कि 'मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए फिर भी कह दिया।'

सत्ता नहीं, हार्ट से बरसाइए प्रेम का बरसात

(हम कहें तो) सामनेवाले का अहंकार खड़ा ही नहीं होता। हमारी आवाज़ सत्तावाली नहीं होती। यानी सत्ता नहीं होनी चाहिए। अगर आप बच्चों से कहो न, तो आवाज़ सत्तावाली नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ। आपने कहा था कि हमारे प्रति कोई दरवाज़े बंद ही करने लगे, उससे पहले हमें रुक जाना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, सही बात है। वह दरवाज़े बंद करने लगे उससे पहले हमें रुक जाना चाहिए। और उसे बंद कर देने पड़े, वहाँ तक (की नौबत आ जाए तो वह) हमारी मूर्खता कहलाएगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। मेरी तो सत्तावाली आवाज़ कभी भी निकली ही नहीं है। सत्तावाली आवाज़ नहीं होनी चाहिए। जब तक वह छोटा हो तभी तक सत्तावाली आवाज़ दिखानी पड़ती है। 'चुपचाप बैठ जा।' वहाँ भी मैं प्रेम ही दिखाता हूँ। मैं तो प्रेम से वश करना चाहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : जितनी पावर प्रेम में है, उतनी पावर सत्ता में नहीं है न!

दादाश्री : नहीं है। लेकिन जब तक आपका कचरा नहीं निकल जाता, तब तक प्रेम उत्पन्न नहीं होगा न। कचरा निकालता है या नहीं? कितने

अच्छे हार्टवाले। जो हार्टिली हो न, उसके साथ दखल मत करना तू। उसके साथ ठीक से रहना। करना हो तो बुद्धिवाले के साथ दखल करना।

समय के साथ आप में भी परिवर्तन लाओ

यह जगत् निरंतर परिवर्तित होता ही रहता है। अगर एक ही प्रकार का रहे न, तो इंसान को अच्छा ही नहीं लगेगा। और मनुष्य का स्वभाव कैसा है कि बचपन में जैसा देखा हो वैसा ही बच्चों से कहता है, 'तुझे ऐसा करना चाहिए।' अरे! रहने दे। वक्त बदल गया, बात बदल गई।

हमारे समय में बेटा अगर ज़रा होटल में चला जाए तो घर पर माँ-बाप दम निकाल देते थे। क्योंकि माँ-बाप ने होटल देखी ही नहीं थी। वे ज़रा अलग ज़माने में पले-बढ़े थे। उनमें कुछ खास तरह के पर्याय पड़ गए थे। उन्हें यह अच्छा नहीं लगता और बच्चों को अच्छा लगता है। इसलिए इसी मामले में सारे मतभेद होते रहते हैं। अनंत जन्मों से, ऐसा नहीं है कि इस जन्म में ऐसा हुआ है पहले से यही चला आ रहा है। नये-पुराने का फर्क चलता ही रहता है।

समय के साथ यह संसार बदलता ही रहता है और बदलते-बदलते फिर वापस सब उसी जगह पर आ जाता है। समय के अनुसार सब बदलना चाहिए।

आज सभी बुज़ुर्ग, पुराने ज़माने के सभी लोग कहते हैं, 'दादा, हमारे बच्चे बिगड़ गए हैं,' उन्हें ज़रा सुधार दीजिए। मैंने कहा, इसका अर्थ यही है कि आप सुधरे हुए हो और आपके बच्चे बिगड़ गए हैं। (तब कहते हैं) 'वे कभी भी मंदिर नहीं आते।' मैंने कहा, 'आपने मंदिर जाकर क्या किया, वह बताओ मुझे।' इसके बजाय तो मंदिर न जाएँ वही अच्छा क्योंकि इन बच्चों ने अंग्रेजी में पढ़ाई की है न, इसलिए नहीं जाते। उनमें समझ आ गई है। आँखों से दिखाई दे तो सत्य मानो, या फिर बुद्धि से पता चले तो मानो। यह बुद्धि से भी समझ में नहीं आता। अर्थात् वे सुधर गए है, क्योंकि सत्य के शोधक बन गए हैं।

खुलासे करके पा लो सही समझ

कुछ बातचीत करना। खुलासा होना चाहिए न! ऐसा कब तक चलने देंगे? अगर बेटा, बड़ा हो जाए और उसके साथ मतभेद हो तो सारी रात नींद नहीं आती। अपने ही बेटे के कारण नींद नहीं आई, देखो न!

यह लाइफ पूरी, यूज़लेस लाइफ (व्यर्थ ज़िंदगी)! पूरे दिन चिंता, मनुष्यपना खो जाता है। क्या लाइफ अच्छी नहीं होनी चाहिए! जहाँ मतभेद हैं, वहाँ भटकना पड़ता है। मतभेद यानी अलग-अलग मार्ग पकड़कर बैठना। एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाता है, उसका क्या कारण है? परिवार में बहुत लोग हैं, इसीलिए न! ज़्यादा लोग होने के कारण सभी के साथ मेल नहीं बैठता और फिर दही जमने में गड़बड़ हो जाती है। दही जमाना हो तो सुबह उसमें गड़बड़ हो जाती है।

सत्युग में खेत और कलियुग में बगीचे

ऐसा है, लोगों का स्वभाव एक ही प्रकार का नहीं होता। जैसा युग होता है न, वैसा स्वभाव हो जाता है। सत्युग में सभी एक मत होकर रहते थे। घर में 100 लोग हों तब भी दादाजी जैसा कहें उस अनुसार! जबकि इस कलियुग में अगर दादाजी कुछ कहें तो उन्हें जली-कटी सुना देते हैं। बाप कुछ कहे तो उन्हें भी जली-कटी सुना देते हैं। कलियुग में ऐसा उल्टा होता है।

लेकिन युग का स्वभाव क्यों बदल गया? वह इसलिए कि मानव तो मानव ही है, मनुष्य ही है लेकिन आपको पहचानना नहीं आता। घर

में 50 लोग हों, लेकिन हमें उन्हें पहचानना नहीं आया, इसलिए गड़बड़ होती रहती है। उन्हें पहचानना चाहिए न, कि यह गुलाब का पौधा है या यह कौन सा पौधा है। क्या ऐसी जाँच नहीं करनी चाहिए?

पहले क्या था? सत्युग में एक घर में सारे गुलाब और दूसरे के घर में सारे चमेली और तीसरे के घर में चंपा! अब क्या हो गया है कि घर में एक चमेली है और एक गुलाब है! अगर गुलाब होगा तो काँटे होंगे और चमेली होगी तो काँटे नहीं होंगे। चमेली का फूल सफेद होगा, गुलाब का गुलाबी होगा, लाल होगा। यों आजकल हर एक पौधा अलग-अलग है। आपकी समझ में आई यह बात?

सत्युग में जो खेत थे, वे कलियुग में बगीचे हो गए हैं लेकिन अगर उन्हें परखना नहीं आए, उसका क्या हो सकता है? जिसे परखना न आए, उसे दु:ख ही होगा न! यानी जगत् की दृष्टि नहीं है इसे देखने की। कोई खराब है ही नहीं। यह मतभेद तो खुद का अहंकार है। देखना नहीं आता, उस चीज़ का अहंकार है। देखना आए तो दु:ख ही नहीं है। मुझे पूरी दुनिया में किसी से मतभेद नहीं है। मुझे देखना आता है कि भाई, यह गुलाब है या चमेली! वह धतूरा है या कड़वे पौधे के फूल हैं। ऐसा सब पहचान लेता हूँ।

बिना अपेक्षा के करो संस्कार सिंचन

संस्कार तो ऐसा है न, कि अगर गुलाब का बीज होगा न तो वह गुलाब ही बनेगा। सिर्फ उसे मिट्टी, पानी और खाद देने की ज़रूरत है। फिर रोज़ उसे मारते नहीं रहना है। आप लोग बच्चों को मारते हो और डाँटते हो। अरे भाई, गुलाब को क्या हम डाँटते हैं कि काँटे क्यों है? तो क्या होगा? किसकी मूर्खता है?

प्रश्नकर्ता : अपनी ही।

दादाश्री : फिर सफेद चंपा से कहें कि, 'तू गुलाबी रंग का क्यों नहीं है?' तो वह लड़ेगा? अत: लोग क्या करते हैं कि अपने बच्चों को अपने जैसा ही बनाते हैं। खुद कंजूस हो तो बच्चे को कंजूस बनाते हैं। खुद नोबल हो तो बच्चे को नोबल बनाते हैं। यानी खुद के आशय पर खींच ले जाते हैं। इस वजह से ये झगड़े हैं। उसे खिलने दो न! बच्चे को! सिर्फ ध्यान से उसमें पानी, खाद वगैरह डालते रहना है।

ये बच्चे तो बहुत अच्छे होते हैं। वह कभी बिगड़ेंगे नहीं। इनके बीज में जितने गुण है उतने ही बिगड़ेंगे, उतना ही होगा। यों समझाओ, यों उल्टा करो या यों करो लेकिन होगा वही। आपको तो पानी छिड़कने की ज़रूरत है। अगर उसे आपमें संस्कार दिखाई देंगे तो उनसे उसे हेल्प मिलेगी। ये तो उस पर ज़बरदस्ती करते हैं, चिल्लाते रहते हैं कि 'तू गुलाब क्यों है? ऐसा काँटेवाला क्यों है?'

अत: हमें समझ लेना है कि इसकी प्रकृति गुलाब जैसी है। उसकी प्रकृति को तो पहचानना पड़ेगा या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ज़रूर।

दादाश्री : एक बार हम देख लें कि नीम है, तो फिर उसके पत्ते कभी मुँह में डालते हैं क्या? क्यों? प्रकृति पहचान जाते हैं कि यह कड़वा ज़हर जैसा है। लाओ, फिर से ट्रायल (जाँच) करते हैं कि कुछ फीका हो गया है या नहीं?

प्रकृति को पहचानकर विकसित करो बच्चे को

इस काल की प्रकृति को पहचानो। बच्चे अगर उनके मुताबिक न चलें तब ये तो बच्चों

के साथ लड़ पड़ते हैं। कहीं आपकी इच्छानुसार बनेंगे? क्या बच्चे को हमारी इच्छानुसार चलना है? अपने-अपने व्यू पोइन्ट (दृष्टिबिंदु) पर ले जाते हैं सब।

प्रकृति को नहीं पहचानते इसलिए मैंने पुस्तक में लिखा है, 'आजकल घर बगीचा बन गया है। इसलिए काम निकाल लो।' खुद अगर नोबल हो और बच्चा कंजूस हो तो कहेगा, 'बिल्कुल कंजूस है, मारो उसे।' वह उसे मार-ठोककर अपने जैसा नोबल बनाना चाहता है। नहीं होगा, वह माल ही अलग है। माँ-बाप अपने जैसे बनाना चाहते हैं। अरे, उसे खिलने दो। उसकी शक्तियाँ क्या है? उनका विकास करो। किसका कैसा स्वभाव है, वह देख लेना है। अरे! भाई तकरार क्यों कर रहे हो?

इस बगीचे को पहचानना है। जब मैं बगीचा कहता हूँ तब लोग जाँच करते हैं, फिर बच्चे को पहचानते हैं। प्रकृति को पहचान न, भाई! एक बार बच्चे को पहचान लो फिर उस अनुसार बरताव करो न! उसकी प्रकृति को देखकर बरताव करेंगे तो क्या होगा? दोस्त की प्रकृति से एडजस्ट हो जाते हो या नहीं होते? उसी तरह प्रकृति को देखना पड़ेगा, प्रकृति को पहचानना पड़ेगा। पहचान कर फिर व्यवहार करेंगे तो झंझट नहीं होगी। वर्ना सभी से मार-पीट करके कहता है कि मेरे जैसे ही बनो, कैसे बनेंगे वे?

अब इसका मेल कब बैठेगा? यानी तब तक एडजस्टमेन्ट करना नहीं आता और मार खाता रहता है। वास्तव में यह क्या है, समझना तो पड़ेगा न? अगर समझ लेगा कि बगीचा तो फिर बदलाव नहीं करेगा। आपके वहाँ पाँच पौधे थे, दो बड़े पौधे और तीन छोटे पौधे। अब वे सभी क्या एक ही प्रकार के होंगे? सभी क्या गुलाब ही होंगे? हमारे सारे पौधे गुलाब क्यों नहीं बनते, ऐसा लगता है न फिर?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हर जगह सभी माँ-बाप कहते हैं कि 'हमारे बच्चे मानते नहीं हैं।' वह क्या है?

दादाश्री : कहाँ से मानेंगे? यह मोगरा, गुलाब की बात कैसे मानेगा? अब अगर हम गुलाब हैं तो सामनेवाले से कहते हैं कि, 'तू क्यों ऐसा फूल उगाता है? तेरा फूल ऐसा क्यों? अत: इसे पहचानकर फिर झगड़ा नहीं करना है। सब अपने-अपने स्वभाव में ही हैं। उन्हें सिर्फ खाद और पानी देने की ज़रूरत है। यह तो अपने-अपने आइडिया पर चलाते हैं, इससे बल्कि लोग बिगाड़ देते हैं। इन बच्चों को बिगाड़ दिया है लोगों ने। आपको ऐसा नहीं लगता कि ऐसी गलती हो रही है?

प्रश्नकर्ता : लगता है।

दादाश्री : किसी भी माली से पूछकर आओ, देखते हैं, उन्हें काँटों से शिकायत हैं क्या। डाँटेगे ही नहीं। वे तो संभलकर काम करते हैं, उन्हें चोट नहीं लगे उस तरह से काम करते हैं। जिन्हें गुलाब की कुछ पड़ी नहीं है, उन्हीं लोगों को काँटों से शिकायत हैं। जिसे गुलाब की पड़ी है, वह तो काँटे का दोष निकालेगा ही नहीं न!

आजकल तो हर एक के अभिप्राय अलग, इसलिए पूरे दिन अभिप्राय की ही झंझट और लड़ाई। आजकल तो बाप का पंथ अलग, माँ का पंथ अलग, बड़े भाई का पंथ अलग, छोटे भाई का पंथ अलग। यों देखने जाएँ तो सभी की प्रकृति अच्छी है लेकिन एक दूसरे के साथ मेल नहीं बैठता। मैं तो प्रकृति को पहचानता हूँ इसलिए मुझे तो बहुत अच्छा लगता है।

खुद सुधर जाएँगे तो सब सुधर जाएगा

बच्चों को अगर सुधारना हो तो हमारी आज्ञा के अनुसार चलो। अगर बच्चे पूछें तभी कुछ कहना है। और वह भी उन्हें कह देना है कि 'मुझसे न पूछो तो अच्छा।' और अगर बच्चों के लिए गलत विचार आएँ तो तुरंत ही उनका प्रतिक्रमण कर लेना।

इस काल में किसी को सुधारने की शक्ति खत्म हो गई है। इसलिए सुधारने की आशा छोड़ दो। क्योंकि यदि मन-वचन-काया की एकात्म वृत्ति होगी तभी सामनेवाला सुधर सकेगा। मन में जैसा हो वैसा ही वाणी में निकले और वैसा ही वर्तन होगा तभी सामनेवाला सुधरेगा। अभी ऐसा नहीं है। घर में हर एक के प्रति जो बरताव है, उसमें 'नॉर्मेलिटी' ले आओ। आचार, विचार और उच्चार में अगर सुधार होता जाए तो खुद परमात्मा बन सकता है और बिगड़ता जाए तो राक्षस भी बन सकता है!

लोग सामनेवाले को सुधारने के लिए सब फ्रेक्चर कर देते हैं। जो पहले खुद सुधरे, वही दूसरों को सुधार सकता है, लेकिन अगर खुद ही नहीं सुधरेगा तो सामनेवाला कैसे सुधरेगा? इसलिए पहले आप अपने बगीचे को संभालो, बाद में दूसरे का देखो। अपना संभालोगे तभी फल-फूल मिलेंगे।

अत: बच्चों को सुधारने के लिए खुद को सुधरने की ज़रूरत है। भगवान ने कहा है 'तू सुधर तो तेरी उपस्थिति से सब सुधर जाएगा।'

सुधरा हुआ किसे कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : सुधरे हुए की परिभाषा क्या है?

दादाश्री : आपके डाँटने में भी उसे प्रेम दिखाई दे। आपकी धमकी में भी उसे आपमें प्रेम दिखाई दे कि, 'ओहोहो! मेरे फादर को मुझ पर कितना प्रेम है।' उलाहना दो लेकिन प्रेम से, तभी सामनेवाला सुधरेगा।

सामनेवाले को सुधारने के लिए हमारे प्रयत्न होने चाहिए, लेकिन जो प्रयत्न 'रिएक्शनरी' हों, वैसे प्रयत्नों में नहीं पड़ना चाहिए। हम उसे झिड़काएँ और उसे बुरा लगे तो, वह प्रयत्न नहीं कहलाएगा। प्रयत्न अंदर करने चाहिए, सूक्ष्म तौर पर। अगर हमें स्थूल तरीके से न आएँ तो सूक्ष्म तरीके से प्रयत्न करने चाहिए। ज़्यादा नहीं कहना हो तो थोड़े में ही कह देना चाहिए कि, 'हमें यह शोभा नहीं देता।' बस, इतना ही कहकर छोड़ देना चाहिए। कहना तो पड़ेगा, लेकिन कहने का तरीका होता है।

आज़माइए प्रेम का प्रयोग

तो आप मेरे कहे अनुसार प्रयोग करो न!

प्रश्नकर्ता : क्या करना है?

दादाश्री : प्रेम से बुलाओ न!

प्रश्नकर्ता : वह जानता है कि उस पर मेरा प्रेम है।

दादाश्री : वैसा प्रेम किसी काम का नहीं है। क्योंकि जब आप बोलते हो, तो फिर कलेक्टर की तरह ही बोलते हो। हमारा कहा हुआ फलित नहीं होता तो हमें बंद कर देना चाहिए। हम मूरख है, हमें कहना नहीं आता, इसलिए बंद कर देना चाहिए। हमारा कहा हुआ फलित नहीं होता बल्कि हमारा मन बिगड़ जाता है, अ०पना आत्मा बिगड़ जाता है। ऐसा कौन करे फिर?

यानी ऐसा यह काल नहीं है कि एक भी व्यक्ति को सुधारा जा सके। वही खुद बिगड़ा

हुआ है तो सामनेवाले को क्या सुधारेगा? वही 'वीकनेस' (कमज़ोरी) का पुतला हो, तो सामनेवाले को क्या सुधारेगा? उसके लिए बलवानपना चाहिए। यानी प्रेम की ही ज़रूरत है। दुनिया हमेशा प्रेम से ही सुधरती है। इसके अलावा उसका अन्य कोई उपाय है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : हम प्रेम रखें और सामनेवाला व्यक्ति अगर हमारे प्रेम को नहीं समझ पाए, तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : क्या करना है? शांत रहना है हमें। और क्या कर सकते हैं हम? क्या मारेंगे उसे?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हम उस दशा तक नहीं पहुँचे हैं कि शांत रह सकें।

दादाश्री : तो कूदना उस घड़ी। और क्या कर सकते हैं? जब पुलिसवाला धमकाए तब क्यों शांत रहते हो?

प्रश्नकर्ता : पुलिसवाले के पास सत्ता है।

दादाश्री : तो हमें उन्हें ओथोराइज़ (अधिकृत) करना है। पुलिसवाले के पास सीधे रहते हैं तो क्या यहाँ सीधे नहीं रह सकते?

तप करके भी सिंचन करो संस्कार

सुधारने के लिए, अपनी दशा बहुत उच्च प्रकार की होनी चाहिए, तभी व्यक्ति सुधरेगा! यह तो खुद को कारोबार करना है, लाखों कमाने हैं और घर के प्रति दुर्लक्ष रखना है तो फिर बेटी भाग ही जाएगी न, और क्या होगा? बेटियों के प्रति, बेटों के प्रति ध्यान तो देना चाहिए। आपको संस्कार देने चाहिए।

यह तो, सेठ पूरे दिन लक्ष्मी के ही विचारों में पड़े रहते हैं! इसलिए सेठ से मुझे कहना पड़ता है कि 'सेठ, आप लक्ष्मी के पीछे पड़े हो? और उधर पूरा घर बिगड़ गया है। बेटियाँ गाड़ी लेकर एक तरफ चली जाती हैं, बेटे दूसरी तरफ चले जाते हैं। सेठानी कहीं ओर चली जाती हैं। सेठ, आप तो हर तरह से लुट चुके हो।' तब सेठ ने पूछा, 'मैं क्या करूँ?' मैंने कहा, बात को समझो और समझो कि जीवन कैसे जीना चाहिए। सिर्फ पैसे के पीछे मत पड़ो। शरीर का भी ध्यान रखो वर्ना हार्ट-फेल हो जाएगा। शरीर का ध्यान, पैसे का ध्यान, बेटियों के संस्कार का ध्यान, सारे कोने साफ करने हैं। आप एक ही कोने को साफ करते रहते हो! अगर बंगले के एक ही कोने को साफ करते रहे और बाकी सब जगह कचरा पड़ा रहे तो क्या होगा? सभी कोने साफ करने हैं। इस तरह जीवन कैसे जीया जा सकता है? इसलिए उन सब के साथ अच्छा बरताव करो। अगर माँ-बाप अच्छे होंगे न तो बच्चे अच्छे बनेंगे ही, समझदार बनेंगे ही। आप खुद तप करो लेकिन इन बच्चों को उच्च संस्कारी बनाओ।

सीखो फैमिली ओर्गेनाइज़ेशन

किसी का दोष नहीं है इसमें। हर जगह ऐसा ही हो गया है इसलिए फैमिली विज्ञान पहले समझना चाहिए, हाउ टू ओर्गेनाइज़ फैमिली? (परिवार की व्यवस्थित सेटिंग कैसे करें?) इन लोगों को पिता बनना नहीं आता, न ही माँ बनना आता है। माँ बच्चे से कुछ अलग ही प्रकार का व्यवहार करती है। क्योंकि माँ सिनेमा देखने जाती है और बच्चे को आया के पास छोड़ जाती है। बस हो गया काम। बच्चे का काम भी हो गया और माँ का काम भी हो गया। ओर्गेनाइज़ हो गई! यों फैमिली ओर्गेनाइज़ हो गई! जाओ, खा-पीकर मज़े करो। ये कैसे संस्कारी लोग हैं हम! जिसकी मिसाल न मिले, ऐसे संस्कारी हैं हम!

दादा सिखाते हैं व्यवहार में उचित प्रमाण

प्रश्नकर्ता : बच्चों के बारे में क्या उचित है और क्या अनुचित, ये समझ में नहीं आता।

दादाश्री : जितना सामने से करते हैं, वही ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंदी कहलाती है। ये 5 साल की उम्र तक ही करना होता है। उसके बाद अगर बेटा कहे कि 'बापू जी मुझे फीस दीजिए।' तब कहना कि 'भाई यहाँ पैसा नल में नहीं आता। मुझे 2 दिन पहले से कहना चाहिए था। मुझे उधार लाना पड़ता है।' ऐसा कहकर 2 दिन बाद देना चाहिए। बच्चे समझते हैं कि जैसे नल में पानी आता है, वैसे ही बापू जी भी पानी ही देते हैं। इसलिए बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार रखो कि उनसे रिश्ता बना रहे और वे सिर पर न भी चढ़ बैठें, बिगड़ें नहीं। यह तो बेटे को इतना अधिक लाड़ करते हैं कि बेटा बिगड़ जाता है! कहीं अतिशय लाड़ करना चाहिए? बकरी पर प्यार आता है? बकरी और बच्चों में क्या फर्क है? दोनों ही आत्मा हैं। अतिशय लाड़ नहीं और निःस्पृह भी नहीं हो जाना चाहिए। बेटे से कहना कि 'कोई कामकाज हो तो पूछना।' जब तक मैं बैठा हूँ तब तक कोई अड़चन हो तो पूछना।' अड़चन हो तभी, नहीं तो हाथ मत डालना।

ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंदी से हैं दुःख

ये 'ओवरवाइज़' (ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद) हो गए हैं, उसी से सब दुःख हैं। उसे गुजराती में क्या कहते हैं बहन, 'ओवरवाइज़' न?

प्रश्नकर्ता : ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद।

दादाश्री : हाँ, ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद कहते हैं। पहले अक्लमंद था, अब ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद बन गया, उसी के दुःख हैं ये सारे। 'नॉर्मेलिटी,' 98 इज़ द नॉर्मल, 99 इज़ द अबव नॉर्मल (सामान्य से अधिक)। 98 सामान्य है, 99 सामान्य से अधिक है। '100' पर भी 'अबव नॉर्मल' कहलाते हैं। 'अबव नॉर्मल' विचार करना वह 'फीवर' (बुखार) है और 'बिलो नॉर्मल' (सामान्य से कम) विचार करना वह भी 'फीवर' है। क्या आपको 'फीवर' आता है? ये विचारों का फीवर?

पढ़ाई के साथ ज़रूरत है समझदारी की

प्रश्नकर्ता : बच्चों को गढ़ने के लिए या संस्कार देने के लिए हमें कुछ सोचना ही नहीं चाहिए?

दादाश्री : विचार करने में कोई परेशानी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : उनको पढ़ाने का क्या ध्येय होना चाहिए?

दादाश्री : यह कि गलत राह पर न चला जाए। अनपढ़ हो, वह कहाँ-कहाँ जाता है? अनपढ़ को टाइम मिले, तो किस तरफ जाता है? वह तोड़फोड तक पहुँच जाता है। पढ़ाई से स्थिरता रहती है और पढ़ाई से उनमें भी थोड़ा बहुत विनय तो आता ही है। हाउ टू एडजस्ट विद पब्लिक (लोगों के साथ कैसे एडजस्ट होना) वह आता है। ज़्यादा पढ़ाई से डेवेलपमेन्ट होता है। गलत दुराग्रह और बेवजह की धमाचौकड़ी सब खत्म हो जाती है। सिर्फ खुद के मोह की ही पड़ी है। परिवार का फायदा हो ऐसी किसी भी चीज़ की उसे ज़रा-सी भी पड़ी ही नहीं है। मैं सभी की खबर रखता हूँ न इसलिए मुझे सब का पता रहता है।

जिसकी मनोवृत्ति सिर्फ पढ़ाई करते रहने की हो उसे पोथी का पंडित कहते हैं। आजकल

के बच्चों को यह भान ही नहीं है। सिर्फ पढ़ाई, पढ़ाई और पढ़ाई ही। बाकी कुछ तो समझे ही नहीं है। वे सिर्फ पढ़े-लिखे हैं, समझदार नहीं हैं। हमारे समय में तो समझदारी और पढ़ाई दोनों साथ-साथ चलते थे और आजकल तो पढ़ाई, वह भी फिर एक ही लाइन, फिर तो आ ही जाएगा न! उसमें और क्या करना है? पढ़ाई सारी थ्योरीटिकल है, वह प्रैक्टिकल नहीं है। प्रैक्टिकल हो तब काम का, समझदारी वह प्रैक्टिकल है।

ज़माने के अनुसार न बरते तो मूरख बनेंगे

जब तक बेटा आपके साथ है, तब तक आपको बेटे के बारे में सोचना है। बेटे को अगर आप यहाँ से दूसरे देश (पढ़ाई के लिए) भेज दो तो बेटे के बारे में सोचना छोड़ देना है और फिर बस चिट्ठी ही लिखना कि, 'भाई, तू हमें इसका जवाब देना, उतना ही।' दूसरे किसी झंझट में नहीं पड़ना है, और तुझे क्या-क्या चाहिए, हमें लिख भेजना।' किसी भी प्रकार की 'वरीज़' (चिंता) मत करना। हमें तो फर्ज़ निभाना है। ताकि उसे हम पर प्रेम रहे!

बेटा 15 साल का हो जाए, तब तक उसे कहना है, तब तक जैसे खुद हो, वैसा ही उसे गढ़ देना। बाद में उसे उसकी पत्नी ही गढ़ेगी। गढ़ना नहीं आता, फिर भी लोग गढ़ते ही हैं न? इसलिए गढ़ाई अच्छी नहीं होती। मूर्ति अच्छी नहीं बनती। जहाँ नाक ढाई इंच का होना चाहिए, वहाँ साढ़े चार इंच का कर देते हैं। फिर उसकी वाइफ आएगी तो काटकर ठीक करने जाएगी। फिर वह भी उसका काटेगा और कहेगा, 'आ जा।'

आपको बहू को भी घर में रखना है और बेटे को भी घर में रखना है? वह भी जब बाप बने तब तक? 6 महीने में ही झगड़े शुरू हो जाएँगे। ऐसी चीज़ करना ही मत। बड़ा हो जाए तो हमें इन फॉरेनवालों की तरह रखना है, बेटा 18 साल का हो जाए तो फिर, 'तू अलग रह' कहना है। अपनी डीलिंग (व्यवहार) फॉरेनवालों से बहुत उच्च है। अलग रहने के बाद भी एकता जैसी ही डीलिंग रखते हैं। फॉरेनवाले ठीक से नहीं रखते। यह ज़माना अलग तरह का है। ज़माने के अनुसार नहीं बरतेंगे तो मूरख माने जाएँगे।

एक आँख में प्रेम और एक आँख में सख्ती

आपके आवेश के कारण बच्चे गलत राह पर चले गए। ज़िम्मेदारी है या नहीं? इसलिए हर एक बात में 'नॉर्मेलिटी' ले आओ। एक आँख में प्रेम और एक आँख में सख्ती रखनी है। सख्ती से सामनेवाले को ज़्यादा नुकसान नहीं होता, क्रोध करने से बहुत नुकसान होता है। सख्ती मतलब क्रोध नहीं लेकिन फुफकार। हम भी जब काम पर जाते हैं तब फुफकारते हैं, 'ऐसा क्यों कर रहे हो? काम क्यों नहीं कर रहे?' व्यवहार में जिस जगह जिस भाव की ज़रूरत हो वहाँ अगर वह भाव उत्पन्न न हो, तो वह व्यवहार बिगाड़ा हुआ कहा जाएगा।

एक बैंक का मैनेजर कहने लगा, 'दादाजी मैं तो वाइफ को, बेटे को या बेटी को कभी भी एक शब्द भी नहीं कहता। चाहे कैसी भी गलतियाँ करें, चाहे कुछ भी करें, लेकिन मैं कुछ नहीं कहता।' उसने ऐसा समझ लिया कि दादाजी, मुझे पगड़ी पहना देंगे, सुंदर! उसे क्या आशा थी, समझ में आया न? और मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया कि आपको किसने बैंक का मैनेजर बना दिया? आपको बेटी-बेटे को संभालना नहीं आता और पत्नी को भी संभालना नहीं आती! तब वह बेचारा तो घबरा गया। मैंने कहाँ, 'आप बिल्कुल बेकार इंसान हो। किसी काम के नहीं हो आप इस दुनिया में।' वह व्यक्ति मन में समझ रहा था

कि मैं ऐसा कहूँगा तो 'दादा' मुझे बड़ा इनाम दे देंगे। अरे भाई, इसका इनाम होता होगा क्या? बेटा गलत करने लगे तब हमें उसे, 'ऐसा क्यों किया?' अब ऐसा मत करना' यों नाटकीय रूप से कहना चाहिए। वर्ना बेटा यही समझेगा कि मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ वह 'करेक्ट' (सही) ही है। क्योंकि पिता जी ने 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) कर लिया है। नहीं कहने से ही तो घर के लोग बिगड़ गए हैं। कहना सबकुछ है लेकिन नाटकीय रूप से! रात में बच्चों को बिठाकर समझाना है, बातचीत करनी है। घर के हर एक कोने से कचरा तो निकालना ही पड़ेगा न? बच्चों को ज़रा कहने की ज़रूरत है। संस्कार तो हैं लेकिन कहना भी पड़ता है।

सुपरफ्लुअस व्यवहार में, जागृति निश्चय की

संसार में ड्रामेटिक (नाटकीय) रहना है। 'आइए बहन, आओ बेटी,' ये सबकुछ 'सुपरफ्लुअस' करना है। जबकि अज्ञानी क्या करते हैं कि गोद में उठाते रहते हैं, इसलिए बेटी भी उस पर चिढ़ती रहती है। ज्ञानीपुरुष व्यवहार में 'सुपरफ्लुअस' रहते हैं इसलिए सभी उन पर खुश रहते हैं, क्योंकि लोगों को 'सुपरफ्लुअस' ही चाहिए। लोगों को ज़्यादा आसक्ति अच्छी नहीं लगती।

नाटक में जैसे ड्रामा करते हैं न, उसी तरह से 'सुपरफ्लुअस' रहना है। बच्चों को डाँटना पड़ता है, पत्नी को भी दो शब्द कहने पड़ते हैं लेकिन नाटकीय भाषा में, गुस्सा शांति से करना है। नाटकीय भाषा अर्थात् क्या कि शांति की ज़ंजीर खींचकर गुस्सा किया जाए तो, उसे नाटक कहते हैं!

ये जो सारी क्रियाएँ हैं उन्हें खुद की क्रिया मान लिया है। ऐसी गलत 'बिलीफ' (मान्यता) हो गई है। यह 'सुपरफ्लुअस' है। इसे मन में रखने जैसा नहीं है, चित्त में फोटोग्राफी करने जैसा भी नहीं है। इसलिए हम कहते हैं न कि आपको 'यह' ज्ञान दिया है, आप 'होम डिपार्टमेन्ट' में अपने रूम में रहो और 'फॉरेन' में 'सुपरफ्लुअस' रहना। यह पूरा व्यवहार 'रिलेटिव' ही है, । सिर्फ 'रियल' ही निश्चय है, हकीकत है, वास्तविक है।

व्यवहार भी जब जागृति सहित रहे तब 'प्रोगेस' (प्रगति) कहलाती है। व्यवहार में ज़रूर ऐसा कहो कि मेरा बेटा है, लेकिन अंदर ऐसा परिणाम नहीं रहना चाहिए। आत्मा किसी का बेटा नहीं बनता, क्या आत्मा किसी का पुत्र या पिता बनता है? अत: व्यवहार जागृति सहित होना चाहिए। यों व्यवहार में बातचीत करो लेकिन नाटक की तरह लेकिन अंदर जागृति रहनी चाहिए। हम आत्मा ही हैं, ऐसा रहना चाहिए। सभी में शुद्धात्मा देखते रहने है। यदि मोक्ष में जाना है तो कोई भी आपका पुत्र-पुत्री नहीं हैं। यदि संसार में रहना है तो पुत्र-पुत्री आपके ही हैं।

समझो एन्करेज और डिस्करेज का समानुपात

प्रश्नकर्ता : आदर्श पिता के तौर पर पुत्र के लिए सारे फर्ज़ क्या हैं, वह बताइए?

दादाश्री : हाँ, वे सारे फर्ज़ एक्ज़ेक्ट होने चाहिए। बेटे को कहाँ पर एन्करेज(प्रोत्साहित) करना, कहाँ पर डिस्करेज (निरूत्साहित) करना, किस हद तक एन्करेज करना, किस हद तक डिस्करेज करना, यह सब समझना चाहिए। आजकल ऐसी समझ नहीं हैं इसलिए सभी बच्चे ऐसी परंपरा में बड़े होते हैं। फिर बच्चों को कोई संस्कार ही नहीं मिले हैं, इसलिए बेचारों की ऐसी दशा हो गई है, हिंदुस्तान में!

प्रश्नकर्ता : बच्चे जो अपने संस्कार लेकर आए हैं, वे तो हैं ही, अब उन संस्कारों में भी..

दादाश्री : बच्चे तो खुद के संस्कार लेकर आते हैं लेकिन अब आपको अपने फर्ज़ भी पूरे करने हैं।

प्रश्नकर्ता : उसमें आदर्श पिता के क्या-क्या फर्ज़ हैं?

दादाश्री : हाँ, हमें जान लेना चाहिए कि उसके कौन-कौन से संस्कार गलत हैं। जो अच्छे संस्कार हैं उनमें अगर जागृत नहीं रहेंगे तो चलेगा लेकिन जहाँ खराब हों वहाँ जागृत रहना चाहिए। और अब उसे कैसे बदला जाए, वह सब हमें जागृति में रखना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हम उसे सुधारने के लिए प्रयत्न तो सारे प्रयत्न करते हैं, फिर भी अगर वह न सुधरे तो फिर उसका प्रारब्ध मानकर छोड़ दें क्या? आदर्श पिता को?

दादाश्री : नहीं। लेकिन प्रयत्न तो आप अपनी तरह से कर रहे हो न? सर्टिफिकेट है आपके पास? मुझे दिखाइए।

प्रश्नकर्ता : हमारी बुद्धि से जितने हो सकें उतने प्रयत्न करते हैं।

दादाश्री : आपकी बुद्धि यानी देखो मैं आपको बताता हूँ कि अगर एक व्यक्ति खुद जज हो, खुद ही आरोपी हो, और खुद ही वकील हो तो कैसा न्याय करेगा? बाकी, कभी भी छोड़ नहीं देना चाहिए। कभी भी। उसका ध्यान रखना चाहिए। छोड़ देंगे तो फिर वह खत्म हो जाएगा। बच्चा अपने संस्कार तो लेकर ही आता है लेकिन उसे हेल्प करके, आपको उन संस्कारों में रंग भरने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो करते हैं फिर लास्ट स्टेज पर उसे प्रारब्ध पर छोड़ देना चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, छोड़ना नहीं चाहिए। जब छोड़ देना है ऐसा लगे तब मेरे पास ले आना। मैं ऑपरेशन कर दूँगा। (समझा दूँगा) छोड़ना नहीं चाहिए, जोखिमदारी है।

योग्य जगह पर अहंकार को पिलाओ पानी

एक बेटा अपने पिता की मूँछे खींच रहा था, तो पिता खुश हो गए। कहने लगे, कैसा बेटा है! देखो न मेरी मूँछें खींच ली।' लो, अगर उसकी मानें, बेटा मूँछे पकड़कर खींचता रहे फिर भी हम कुछ नहीं कहें, तो फिर आगे क्या होगा? और कुछ नहीं करें, तो ज़रा सी च्यूंटी काट लें। च्यूंटी काटने से वह समझ जाएगा कि 'यह गलत बात है।' मैं जो बरताव कर रहा हूँ, 'वह गलत है।' उसे ऐसा ज्ञान होगा। ज़्यादा मारना नहीं है, हल्की सी च्यूँटी काटनी है।

यानी उसे ज्ञान होना चाहिए कि मूँछें खींचने से च्यूँटी काटते हैं। वह ज्ञान खोजता है। ऐसा करने से क्या ज्ञान होता है? अगर तब एन्करेज करें कि बहुत अच्छा, बेटा कितना अच्छा है, तो एन्करेजमेन्ट मिल जाएगा। फिर दूसरी बार और ज़्यादा खींचेगा!

हमें हर एक गलत बात में बच्चों को समझाना चाहिए कि 'यह गलत है।' वह उनके ध्यान में आ जाना चाहिए। वर्ना ये सभी ऐसा मान लेते हैं कि 'मैं जो करता हूँ वह सब ठीक है।' उससे फिर गलत राह पर चले जाते हैं। इसलिए बच्चों को बता देना चाहिए।

उसने अगर अच्छा काम किया हो, तो उसे शाबाशी देनी चाहिए और उसे कहाँ पर थपथपाना है? हम पीछे पीठ पर जहाँ मारते हैं न! वहाँ पर। तब अहंकार एन्करेज होगा। इसलिए फिर से अच्छा काम करेगा।

छोटे बच्चे का अहंकार सुषुप्त दशा में होता

है। अहंकार तो होता है लेकिन वह कॉम्प्रेस होकर (दबा हुआ) रहता है। वह तो जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे फूटता है। छोटे बच्चे को अहंकार का गलत पानी न पिलाया जाए तो वे समझदार बनते हैं। उनके अहंकार को पोषण देने के लिए अगर आपके द्वारा खुराक नहीं मिलेगी तो बच्चे सुंदर-संस्कारी बनेंगे।

बाप मूली, माँ गाजर तो बच्चे कैसे होंगे?

माँ-बाप के तौर पर कैसे रहना चाहिए उसका भी भान नहीं है। अब एक बाप तो ऐसा बता रहा था कि उसके बेटे ने क्या किया, पैर ऊपर उठाकर, पैर की एड़ियाँ ऊपर उठाकर उनके कोट की जेब में से 25 पैसे निकाल लिए। उसका बाप वहाँ बैठा हुआ था, उसने देखा कि बेटा अब कितना होशियार हो गया है! इसलिए उसके बाप ने बेटे की मम्मी को बुलाया। तब वह रोटी बेल रही थी। तो कहने लगी, 'क्या काम है? मैं रोटी बेल रही हूँ।' 'तू यहाँ आ, जल्दी आ, जल्दी आ, जल्दी आ।' वह दौड़ती हुई आई, 'क्या है?' तब कहने लगा, 'देख, देख, बेटा कितना होशियार हो गया। देख, इसने पैर की एड़ियाँ ऊपर उठाकर अंदर से ये 25 पैसे निकाले हैं।' तो यह देखकर बेटा समझ गया, 'आज मैंने यह सब से अच्छा काम किया है! अब मैं ऐसा काम सीख गया हूँ।' तो फिर आगे जाकर चोर बना। और क्या बनेगा? जेब से निकालना अच्छा है।' ऐसा ज्ञान उसे प्रकट हो गया। आपको क्या लगता है? क्यों नहीं बोल रहे? क्या ऐसा करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : ऐसे पागल, कहाँ से पैदा हो गए! ये बाप बन बैठे! शरम नहीं आती? समझ में आ रहा है कि बेटे को कैसा उत्तेजन मिला? बेटा, देखता रहा कि मैंने बहुत बड़ा पराक्रम किया है! इस तरह लुट जाना क्या हमें शोभा देता है? क्या कहने से बच्चे को अच्छा, 'एन्करेजमेन्ट' मिलेगा और क्या कहने से उसका नुकसान होगा, उसका भान तो होना चाहिए न? अरे! एक चाँटा मार दो ताकि वह समझ ले कि जेब से पैसे निकालना गलत ज्ञान है और फिर अगर अच्छा काम करे तब उसे एन्करेज करो। ये तो 'अन्टेस्टेड फादर' और 'अन्टेस्टेड मदर हैं'। बाप मूली और माँ गाजर। फिर कहो, बच्चे कैसे पैदा होंगे? सेब थोड़े ही बनेंगे?

राजा को अगर राज्य चलाना न आए तो प्रजा दु:खी हो जाती है और बाप को अगर घर चलाना न आए तो बच्चे बिगड़ जाते हैं। इसलिए क्या माँ-बाप को नहीं समझना चाहिए कि हाउ टू चेन्ज (कैसे बदलें)? इसीलिए सभी के लिए मुझे अन्क्वॉलिफाइड लिखना पड़ा। क्या मुझे तिरस्कार करना अच्छा लगता होगा? अच्छा नहीं लगता। लेकिन आप थोड़ा तो ट्रेन (प्रशिक्षित) करो इन्हें।

युक्ति से मुड़ता है अहंकार लघुत्तम की तरफ

प्रश्नकर्ता : घर में स्वतंत्रता और स्वच्छंदता इतनी आ गई है कि यदि अपने ही बच्चों से कहने जाएँ तो हमारा सुनते ही नहीं।

दादाश्री : अरे! मेरे पास आकर 5 मिनट में ही सुधर जाते हैं। इनसे पूरी ज़िंदगी नहीं सुधरते तो क्या समझ नहीं जाना चाहिए कि वे हथोड़े से बबूल के पेड़ को गिराने जाते हैं। बबूल को कुल्हाड़ी से काटना चाहिए या हथौड़े से काटना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : कुल्हाड़ी से!

दादाश्री : अगर हथौड़े से मारोगे-ठोकोगे, इस तरफ से ठोको या उस तरफ से ठोको तो क्या बबूल गिरेगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : एक पिता अपने 3 साल के बेटे को यहाँ दर्शन करवाने लाए और बेटे से कहने लगे, 'भाई, तू दादा के दर्शन कर, दादाजी को 'नमस्कार' कर।' तब वह कहने लगा, 'नहीं।' साफ मना कर दिया, 'नहीं करूँगा,' कहने लगा। नहीं माना मतलब नहीं माना। तब पिताने क्या किया? उसको उठाकर यहाँ स्पर्श करवा दिया। तो वह पिता की तरफ देखकर चिढ़ गया और फिर पिता को मारने लगा। इसके पीछे क्या है? तब मैंने कहा, 'यह पिता की भूल है, बेटे की भूल है या मेरी भूल है?' किसकी भूल के कारण ये झगड़े हैं? किसकी भूल के कारण यह गाड़ी रुक गई है? इसका कारण क्या है?

फिर उसके पिता से कहा कि 'तुझे अपने ही घर के कारखाने के ताले को चाबी से खोलना नहीं आता।' तब फिर पिताने बहुत ज़ोर लगाया कि 'यह लाकर दूँगा, वह लाकर दूँगा।' जब बहुत लालच दिया तब जाकर उसने 'नमस्ते' किया, लेकिन हाथ यों पीछे रखकर 'नमस्ते' किया, फिर भी सीधा नहीं किया। यों उल्टा घूमकर किया। तो मैं समझ गया कि डिफेक्ट (कमी) कहाँ है। इस लड़के को कितना अहंकार होगा कि सामने देखकर 'नमस्ते' भी नहीं कर पा रहा। वह पूर्व का कितना अहंकार लेकर आया है!

फिर उसके पिता ने कहा, ''ऐसे नहीं करते। सीधी तरह कर 'नमस्कार'।'' लेकिन ऐसा कहीं हुआ? सही तरीके से समझाओ। तब कहने लगा, 'समझाता हूँ लेकिन मानता नहीं।' मैंने कहा, 'कैसे मानेगा?' पिता बन गए हो इसलिए। पिता न बने होते और भाई बने होते तो मान लेता। लेकिन आप तो बाप बनकर बैठे हो। फिर कहने लगे, 'कर, करता है या नहीं?' मुझसे कहने लगे, 'यह नहीं करेगा।' तब मैंने कहा, ''रुक जाओ। बेटा, तो मैं तुझे 'नमस्ते' करूँ? तू यहाँ आ। जय सच्चिदानंद।'' तो उसने तुरंत कर दिया। ऐसे यों सीधा हाथ जोड़कर कहा, 'जय सच्चिदानंद।' जब मैंने 'नमस्कार' किया तब उसने भी तुरंत ही कर दिया। उसकी अटकण (जो रुकावट बंधनरूप हो जाए, जो आगे नहीं बढ़ने दे) ऐसी थी! तब पिता कहने लगा, 'आपने अच्छा किया।' तब मैंने कहा, 'इतना सीखो।' व्यर्थ में यों ही बाप बन बैठे हो। यह तो आँखें दिखाकर डराता है। बाप मत बनना भाई, बच्चा जिद पर अड़ गया है! और यह बच्चा, वैसा बच्चा नहीं है, पिछले जन्म में 80 साल का होकर मर गया था और अभी 83 साल का हो गया है।

यानी चाबी से ताला खोलना आना चाहिए। पत्थर मारते रहेंगे तो ताला खुलेगा क्या? ताला खोलना नहीं आना चाहिए क्या?

प्रश्नकर्ता : आप, जिस लेवल के व्यक्ति हों, उनके साथ उसी तरह की बातें करते हैं।

दादाश्री : हाँ, नहीं तो क्या करें फिर!

बच्चों को बार-बार टोकने से कितना फायदा?

इस काल में कम बोलना, उसके जैसा और कुछ भी नहीं है। इस काल में तो बोल पत्थर जैसे लगें, ऐसे निकलते हैं! और हर एक के साथ ऐसा ही होता है। इसीलिए बोलना कम कर देना अच्छा है। किसी से कुछ भी कहने जैसा नहीं है। कहने से अधिक बिगड़ता है। उसे कहें कि 'जल्दी गाड़ी पर जा,' तो वह देर से जाता है और कुछ न कहें तो टाइम पर जाता है। हम नहीं हों, तब भी सब चले ऐसा होना चाहिए। यह तो खुद का झूठा अहंकार है! जिस दिन से आप बच्चों के साथ किच-किच करना बंद कर दोगे, उसी दिन से बच्चे सुधरने लगेंगे। आपके बोल

अच्छे नहीं निकलते इसीलिए सामनेवाला चिढ़ जाता है। आपके बोल वह स्वीकार नहीं करता, बल्कि वे बोल वापस आते हैं। आप तो बच्चे को खाना-पीना बनाकर दो और अपना फर्ज़ पूरा करों, अन्य कुछ कहने जैसा नहीं है। कहने से फायदा नहीं है, ऐसा सार निकलता है न?

अलग देखकर प्रतिक्रमण से धो लो

प्रश्नकर्ता : पूरे दिन बच्चे बाहर घूमते रहते हैं। घर का कुछ काम हो या बाहर का कुछ ज़रूरी काम हो, तो वो उसे करना चाहिए न? डाँटने पर भी कुछ नहीं करते। फिर मौन नहीं रहा जाता और बेटे पर हाथ उठ जाता है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा मौन नहीं हो जाना है। आपको शुद्धात्मा की जागृति रहती है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : रहती है न!

दादाश्री : फिर क्या परेशानी है? ऐसा है न, वास्तव में अपना साइन्स तो क्या कहता है कि मारते समय आप उसे (चंदूभाई को) देखते रहो, 'चंदूभाई' बेटे को मार रहा हो, उस समय आप 'चंदूभाई' को देखते रहो। 'चंदूभाई' क्या कह रहे हैं, इतना ही देखते रहना है और फिर 'चंदूभाई' से कहना है कि 'आपने यह अतिक्रमण किया है, इस बेचारे को क्यों मारा? आप ऐसे कैसे डाँट सकते हो? आपने क्यों डाँटा? इसलिए इन सभी का प्रतिक्रमण करो।' मतलब 'चंदूभाई' जब बेटे को मार रहे हों तो उस समय आपको जानते ही रहना है और साथ ही प्रतिक्रमण करवाते रहना है। ऐसा कर सकोगे न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

सही समझ से आए हल

एक व्यक्ति संडास के दरवाज़े पर लातें मार रहा था। मैंने कहा कि, 'लातें क्यों मार रहे हो?' तब कहने लगा 'कितनी सफाई करता हूँ, फिर भी बदबू आती है, बहुत सफाई करता हूँ फिर भी बदबू आती है।' बोलो, अब ये कितनी मूर्खता कहलाएगी! संडास के दरवाज़े पर लातें मारने से खुद को भी परेशानी होती है और दरवाज़े भी टूट जाते हैं।

कितनी सारी परेशानियाँ हैं! सारा संसार मुसीबत में फँस गया है, नासमझी के कारण मुसीबत में फँस गया है। यह मुसीबत सॉल्व (हल) हो जाए तो कल्याण हो गया।

अंदर समभाव रखकर बच्चे के भाव बदलो

बच्चे में अगर खराब गुण हों तो माँ-बाप उन्हें डाँटते हैं और कहते फिरते हैं कि, 'मेरा बेटा तो ऐसा है, नालायक है, चोर है।' अरे, वह ऐसा करता है, उस करे हुए को रख न एक तरफ। लेकिन अभी उसके भाव बदल न! उसके भीतर के अभिप्राय बदल न! उसके भाव कैसे बदलें, वह माँ-बाप को नहीं आता। क्योंकि 'सर्टिफाइड' माँ-बाप नहीं हैं। 'सर्टिफिकेट' नहीं है और माँ-बाप बन बैठे हैं! बच्चे को यदि चोरी की बुरी आदत पड़ गई हो तो माँ-बाप उसे डाँटते रहते हैं, मारते रहते हैं, कि 'तुझमें अक्ल नहीं है, तू ऐसे करता है, वैसे करता है।' ऐसे झिंझोड़ते रहते हैं। इस तरह माँ-बाप 'एक्सेस' (ज़रूरत से ज़्यादा) बोलते हैं! कभी भी 'एक्सेस' बोला हुआ 'हेल्प' नहीं करता। इसलिए बेटा क्या करता है? मन में नक्की करता है कि, 'भले ही बोलते रहे। मैं तो ऐसा ही करूँगा।' तो इस तरह माँ-बाप बेटे को और अधिक चोर बनाते हैं। द्वापर, त्रेता और सत्युग में जो हथियार थे उनका आज कलियुग में लोग उपयोग करने लगे हैं। बेटे को बदलने का तरीका कुछ और है। उसके भाव

बदलने हैं। उस पर प्रेम से हाथ फेरकर कहना है कि, 'आ बेटा, भले ही तेरी माँ चिल्लाए, तू इस तरह किसी की चोरी करे, वैसे ही कोई तेरी जेब में से चोरी कर ले तो तुझे सुख लगेगा क्या? उस समय तुझे अंदर कैसा दुःख होगा? वैसे ही सामनेवाले को भी दुःख नहीं होगा क्या? इस तरह पूरी थ्योरी बेटे को समझानी पड़ेगी।

यों हाथ-वाथ घुमाने से उस बेचारे को सुख लगेगा, उसके दिल को शांति होगी फिर कहना कि, 'भाई, देखो हम कौन से खानदान से हैं, ऐसा सबकुछ।' फिर भाव बदलेगा कि यह चीज़ करने जैसी है ही नहीं। जिसके यहाँ चोरी की उसका इस तरह से प्रतिक्रमण कर लेना और मुझे बताना कि कितने प्रतिक्रमण किए। (इस तरह से उसे समझाना) तो फिर वह रास्ते पर आ जाएगा।

बाहर दिखने में विरोध, अंदर समभाव। वह चोरी करे हमें उस पर ज़रा सी भी निर्दयता नहीं आनी चाहिए। अगर अंदर समभाव टूट जाएगा तो निर्दयता हो जाएगी और ऐसे समय पर जगत् निर्दय बन जाता है।

लाड़ और प्रेम की भेदरेखा

हमारी तो बच्चों के साथ बहुत बनती है। छोटे बच्चे मुझसे फ्रेन्डशिप (मित्रता) करते हैं। जब हम यहाँ अंदर आ रहे थे न, तब वह छोटा बच्चा मुझे लेने आया, कहने लगा, 'चलिए!' आप तो लाड़ लड़ाते रहते हो, हम लाड़ नहीं लड़ाते, हम तो प्रेम करते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह ज़रा समझाइए न, लाड़ लड़ाना और प्रेम करना। उदाहरण देकर समझाइए।

दादाश्री : अरे, एक व्यक्ति ने तो अपने बेटे को, जो 2 सालों से नहीं मिला था, ऐसा दबाया, यों छाती पर लगा लिया। उसे उठाकर यों दबा दिया! फिर जब बेटे का दम घुटने लगा और उसके पास कोई चारा नहीं रहा, तो उसने काट लिया। यह कोई तरीका है? इन लोगों को तो बाप बनना भी नहीं आता!

प्रश्नकर्ता : और, जो प्रेमवाला हो वह क्या करता है?

दादाश्री : हाँ, वह, यों हाथ फेरता है। गाल पर हल्के से चपत लगाता है, ऐसा सब करता है और उसके कंधे थपथपाता है। यों खुश कर देता है।

जहाँ अहंकार नहीं, वहाँ प्रेम

बच्चे को अगर मैं मारता रहूँ न, फिर भी खुश हो जाता है और तू मारकर देख तो? क्योंकि तुझमें अहंकार है, इसलिए उसका अहंकार भी जागृत हो जाता है। मुझ में प्रेम है, इसलिए उसमें प्रेम जागृत हो जाता है। मैं उसे चाहे जितना मारूँ फिर भी अंदर मुझे कुछ नहीं रहता, इसलिए मुझ पर खुश हो जाता है। क्योंकि मैं प्रेम से देखता हूँ और तुझ में तो अहंकार भरा है, इसलिए फिर बच्चे में भी अहंकार जाग जाता है। और फिर दोनों के अहंकार लड़ पड़ते हैं, 'आ जा' कहेगा।

आप उसे एक हल्की सी चपत लगाओ तो रोने लगेगा, उसका क्या कारण है? उसे चोट लगी इसलिए? नहीं उसे चोट लगने का दुःख नहीं है, उसका अपमान किया उसका दुःख है। इस जगत् ने प्रेम शब्द देखा ही नहीं है। अगर थोड़ा बहुत कहीं प्रेम देखा होगा, तो मदर (माँ) का प्रेम होगा।

'मदर' के प्रेम में प्रेम होता है और बाकी

सब आसक्तियाँ हैं। जिसके पीछे ऐसा होता है कि मेरे काम आएगा, बच्चे बड़े होकर सेवा करेंगे, ऐसा करेंगे, नाम करेंगे, ये सभी आसक्तियाँ हैं। पिता जी का प्रेम स्वार्थी होता है। कहेंगे कि बेटा मेरा नाम रोशन करेगा। सिर्फ माँ का ही प्रेम ज़रा सा...वह भी ज़रा सा ही, उसके मन में भी रहता है कि बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा। जहाँ पर कुछ भी लालच है वहाँ पर प्रेम नहीं है। प्रेम चीज़ ही अलग है। अभी आप हमारा प्रेम देख रहे हो लेकिन अगर समझ में आए तो। इस दुनिया की कोई भी चीज़ मुझे नहीं चाहिए। डेढ़ साल का बच्चा कहेगा, 'दादा, मुझे आपके साथ खेलने आना है।' तब मैं कहता हूँ, 'हाँ।' क्यों डेढ़ साल के बच्चे को मुझसे डर नहीं लगता होगा न?

प्रश्नकर्ता : आप में कोई अहंकार नहीं दिखाई देता इसलिए।

दादाश्री : अहंकार नहीं है इसीलिए प्रेम महसूस होता है!

मोह और प्रेम की भेदरेखा

प्रश्नकर्ता : मोह और प्रेम, इन दोनों के बीच की भेदरेखा क्या है?

दादाश्री : यह पतंगा है न! पतंगा दीये के पीछे पड़कर 'स्वाहा' हो जाता है न! वह अपनी ज़िंदगी खत्म कर लेता है, उसे मोह कहते हैं, जबकि प्रेम टिकता है, प्रेम टिकाऊ है। हालांकि उसमें भी थोड़ी आसक्ति की बीमारी होती है लेकिन फिर भी टिकाऊ है। वह मोह नहीं है।

मोह मतलब 'यूज़लेस' (बेकार) जीवन। वह तो अंधों जैसा है। अंधा इंसान पतंगे कि तरह मंडराता है और मार खाता है जबकि प्रेम तो टिकाऊ है, उसमें तो पूरी ज़िंदगी का सुख होना चाहिए, वह ऐसा नहीं है कि क्षणभर का सुख ढूँढे।

हमारे एक रिश्तेदार तो, बच्चों का बहुत ही ध्यान रखता था, खुद थोड़ी बहुत तकलीफ सहन करके भी। मैंने कहा, 'तेरे फादर की फोटो दिखाई नहीं दे रही।' तब उसने कहा, 'उन दिनों ज़्यादा फोटो नहीं होते होंगे।' मैंने कहा, 'पूजा किसकी करते हो? फादर की पूजा करते हो?' तब कहने लगे, 'नहीं।' फिर मैंने कहा, 'लेकिन ये बच्चे तो आपकी पूजा करेंगे ही न? बच्चों के लिए इतना ज़्यादा मेहनत जो करते हो?' तब कहने लगे, 'नहीं, कोई नहीं करेगा।' तब मैंने कहा, 'क्या देखकर पीछे लग गए हो?' गाय-भैंस भी 6 महीने, 12 महीने के हो जाने पर बच्चे को अलग छोड़ देते हैं। तू तेरे रास्ते और मैं मेरे रास्ते।

प्रश्नकर्ता : इस बारे में ऐसा कहा जाता है कि 'देअर इज़ नो लॉ इन द नेचर, कुदरत में कोई नियम नहीं है।'

दादाश्री : बच्चा अगर दूध पीने न आया हो तो जानवर तो उसी तरफ देखते रहते हैं लेकिन वह लिमिट 6 महीने तक ही। फॉरेनर्स की लिमिट 18 साल की और अपनी तो कोई लिमिट ही नहीं है न! 7 पीढ़ी हो जाए फिर भी! 7वीं पीढ़ी के मेरे बेटे की बहू सोने की हाँडी में छाछ बिलोए और वह भी 7वीं मंज़िल पर और मैं अपनी आँखों से देख सकूँ, अंधा ऐसी माँग करता है! 7वीं मंज़िल तक मुझे दिखाई दे और 7वीं पीढ़ी के बेटे की बहू अर्थात् खुद कितने साल का हुआ! कैसा माँगा? भगवान भी घबरा गए कि मैं इस देश में कहाँ से आ गया!

मोहरूपी पज़ल की मार

बचपन में मैंने अपनी नज़रों से प्रत्यक्ष देखा था। एक अंधे बुज़ुर्ग थे। जब वे खाना खाते तब बच्चे उनकी थाली में कंकड़ डाल

जाते थे। वे चिढ़ जाते और चिल्लाने लगते थे, उससे बच्चे खुश हो जाते और तब और भी ज़्यादा कंकड़ डाल देते! यह जगत् ऐसा स्वार्थवाला है!

गोद का बच्चा होता है न, उसे समुद्र में ले जाएँ, तो वह पैर नीचे लगाने की कोशिश करता है, जब तक उसके पैर ज़मीन को छू न ले न, तब तक हमें नहीं छोड़ता और जैसे ही ज़मीन को छुआ तो हमें छोड़ देता है यानी यह पज़ल है सारा।

जब बड़ा हो जाए अहंकार आ जाए, उसके बाद उसके पैर पहुँचते हैं, फिर रौब मारता है न! जब तक पैर नहीं पहुँचते तब तक तो शांत रहता है लेकिन पहुँचते ही हम पर रौब मारने की तैयारी हो जाती है! वह खुद के स्वार्थ में ही रहता है।

बेटा, जब 'पापा जी, पापा जी' करे तब वह कड़वा लगना चाहिए, अगर मीठा लगा तो वह सुख उधार का लिया कहलाता है। हमने तो उधार का सुख लेने का व्यवहार ही छोड़ दिया था। अरे! खुद के आत्मा में अनंत सुख है! उसे छोड़कर इस भयंकर गंदगी में पड़ें क्या?

इसलिए हमारे अंदर के भगवान सच्चे और मोक्ष में गए तो काम बन गया! वापस ऐसे कितने ही जन्म होनेवाले हैं उसका कोई ठिकाना नहीं है। मोक्ष की मुहर लग जाएगी तो दो-तीन जन्मों में ठिकाने पर पहुँच जाओगे लेकिन ऐसी मुहर लगी नहीं है लेकिन फिर भी इस जगत् पर लोगों को कितना मोह है!

निरा मार ही खाते रहे हैं, अनंत जन्मों से मोह की मार खाते रहे हैं! अब हिंदुस्तान में आने के बाद भी अगर हम मोह की मार खाएँ तो वह हमें शोभा नहीं देता।

स्थूल से सूक्ष्मतम तक के मोह की समझ

प्रश्नकर्ता : स्थूल मोह, सूक्ष्म मोह, सूक्ष्मतर मोह और सूक्ष्मतम मोह किसे कहते हैं, उदाहरण सहित समझाइए।

दादाश्री : वह कैसा है? जैसे हम दूध निकाल लें, दूध निकाला, वह स्थूल कहलाता है। उसमें थोड़ा सा पानी मिलाते गए, वह सूक्ष्म कहलाता है। फिर उससे भी ज़्यादा पानी, बहुत पानी मिलाकर फिर चाय बनाई, वह भी दूध कहलाएगा न, पानी मिलाया फिर भी, वह सूक्ष्मतर कहलाता है और सूक्ष्मतम यानी सेपरेट (मक्खन निकाली हुई छाछ) इस तरह से है वह।

स्थूल मोह मतलब क्या? बाप अमरीका था और बेटा यहाँ पला-बढ़ा था। वह 11 साल का हो गया। जब बाप अमरीका से वापस आया तो बेटा आकर पापा जी कहकर 'नमस्ते' करने लगा। बाप ने प्रेम के मारे उसे उठाकर ऐसा कसकर गले लगाया कि बेटे ने दाँतों से काट खाया। यह किस प्रकार का मोह है? स्थूल मोह। दूर रहकर बेटे को 'नमस्ते' करें और सिर पर हाथ रखें वह सूक्ष्म मोह। बेटा गलत करे और उसे धमकाएँ, वह सूक्ष्मतर मोह। वह भी एक प्रकार का मोह है। और सूक्ष्मतम मोह कौन सा? बेटा गालियाँ दे, घर में न आने दे, फिर भी आखिर में घर ज़ायदाद उसी को दे दें। ये सब मोह के प्रकार हैं! समझ में आया न?

देखना, मोह न बन जाए कल्याण में बाधक

सभी जगह जहाँ देखें वहाँ वही की वही गलतियाँ हैं। लोग मोह से कहते हैं, मेरा बेटा! अरे! नहीं है तेरा बेटा। ज़रा तकरार करके देख, उसके विरुद्ध हो जा एक घंटे के लिए। वह तेरा बेटा है या नहीं, पता चल जाएगा। यह सब तो सीमा में ही अच्छा है। छिपा प्रेम रखना है। बाहर

से प्रेम ओपन नहीं करना चाहिए बच्चों से। वह तो आसक्ति कहलाती है। सब कुछ तरीके से करना चाहिए। खुद का कुछ कल्याण तो करना चाहिए न? तो अभी भी इतना मोह किसलिए? फिर भी बच्चों को परेशान नहीं करना है। उनकी जो ज़रूरतें हों, जो चाहिए वह सब देना है।

यह सारी तो पराई पीड़ा है। बेटा, ऐसा नहीं कहता कि मुझ पर सबकुछ लुटा दो लेकिन यह तो बाप ही बेटे पर सबकुछ लुटा देता है। यह अपनी ही भूल है। इस कलियुग में लेनदार ही बच्चे बनकर आए हैं। अगर हम ग्राहक से कहें कि, 'मुझे तेरे बिना अच्छा नहीं लगता, तेरे बिना अच्छा नहीं लगता।' तो ग्राहक क्या करेगा? मारेगा। ये तो 'रिलेटिव' संबंध हैं। इनमें से कषाय खड़े होते हैं। यह राग-कषाय से द्वेष कषाय खड़ा हो जाता है। भावुक बनना ही नहीं चाहिए। जब खीर उफनकर बाहर आने लगे तब आग से लकड़ी निकाल लेनी पड़ती है, उसके जैसा है।

यह मोह किस पर, झूठे सोने पर? सच्चा हो तो मोह रख सकते हैं। यह तो ग्राहक-व्यापारी जैसा संबंध। माल अच्छा मिले तो ग्राहक पैसे देगा, ऐसा है यह संबंध। एक ही घंटे के लिए अगर बेटे के साथ झंझट करे तो संबंध टूट जाएगा, ऐसे संबंध में क्या मोह रखना?

मनुष्यों का संसार तो जंजाल है

यह संसार है, जिसे जंजाल कहा गया है, यदि जंजाल न कहा होता तो वापस मुड़ने का प्रयत्न ही नहीं करता न!

यह जाल ही है, है न? मछलियों का जाल तो फिर अच्छा है, उसे कहीं भी दाँत से काटा जाए तो कट जाता है जबकि यह जाल तो कटता ही नहीं, इसे तो जंजाल कहते हैं। यह जाल नहीं, जंजाल है! फिर, कटता भी नहीं, भुगतने पर ही छुटकारा है। भुगतने के बाद ही जाल छूटता है। सारे हिसाब चुकाने के बाद फिर जाल छूटता है! लेकिन फिर नया जाल तो तैयार कर दिया होता है, अगले जन्म का जाल वापस खड़ा कर चुके होते ही हैं!

कोई क्या किसी का बेटा या बाप होता होगा? यह तो ऐसा है जैसे कि एकदम से ये पंछी इधर से उड़कर आए, उधर से उड़कर आए और फिर रात को वहाँ बैठ गए, फिर सुबह होते ही सब उड़कर जाने लगे। ऐसा है यह। वे एक साथ बैठे हैं और फिर बारह घंटे के लिए शादी भी करते हैं! सुबह उठकर जाना है न!

निश्चय-व्यवहार की नीव पर आदर्श व्यवहार

वास्तव में कोई बाप-बेटे नहीं हैं। रियली स्पीकिंग (हकीकत में) पूरी दुनिया में कोई बाप है ही नहीं और रियली स्पीकिंग अगर बाप होता, तो बाप के मर जाने पर बच्चे भी उसी के साथ चले जाते कि 'पापा, मैं नहीं जी सकूँगा।' मेरे फादर और मैं एक ही हैं लेकिन फिर भी वह मरता नहीं न? कोई नहीं मरता न? सब समझदार हैं न? बाद में ब्रेड-बिस्किट, पाऊँ वगैरह खा लेता है!

व्यवहार धर्म में तो आप कभी रहे ही नहीं हैं। आपने तो व्यवहार भी बिगाड़ा और यह निश्चय भी बिगाड़ा। व्यवहार इतना ही करना है कि बाप बना है तो बेटे के लिए तू चक्कर मत लगाना, वर्ना बेटे को बुरा लगेगा। बेटे को इतना करना है कि बाप के लिए तू चक्कर लगाना वर्ना बुरा दिखेगा। इस तरह व्यवहार-विवेक नहीं चूकना है।

व्यवहार हमेशा आदर्श होना चाहिए। जो व्यक्ति निश्चय में चूक गया न, वो व्यवहार नहीं

कहलाता। निश्चय को निश्चय में रखना है और व्यवहार को व्यवहार में रखना है, उसे आदर्श व्यवहार कहते हैं। मैं पूरे दिन आदर्श व्यवहार में ही रहता हूँ। मेरे घर के आसपास पूछने जाएँ न तो सब कहेंगे, 'इन्होंने कभी भी झगड़ा नहीं किया। कभी भी शिकायत नहीं की, कभी किसी पर गुस्सा नहीं किया।'

शील के प्रभाव से बच्चे संस्कारी बनते हैं

ऐसा है कि कुछ संयोगों में बेटा सामने बोले, कुछ संयोगों में पत्नी सामने बोले, उस घड़ी यदि आप बहस करोगे तो आपका शील खत्म हो जाएगा। उसके बजाय हमें देखते रहना है कि यह मशीन कुछ बिगड़ गई लगती है! इतना देखते रहना है कि किस तरफ से यह मशीन बिगड़ी है, वर्ना ये लोग तो क्या करते हैं, कहते हैं कि 'तू ऐसी है, तू वैसी है,' तो बस हो गया काम। उसका शील खत्म हो गया। हमें तो कोई लाख गालियाँ दें तब भी हम कहते हैं कि 'आओ भाई,' तब अगर कोई कहेगा कि 'बेटा सामने बोलता है, तब अगर अभी से डराएँगे नहीं तो फिर वह और ज़्यादा ऐसा करेगा।' नहीं, यों डराने से तो आपका शीलवानपना टूटता जाएगा और आपकी निर्बलता बढ़ती जाएगी और बच्चे आप पर सवार हो जाएँगे! इसलिए अगर आप उसे डराओगे नहीं और सहन करके सुन लोगे, तो धीरे-धीरे वह 'टर्न आऊट (मुड़) हो जाएगा। इस शील के प्रभाव के कारण! बाकी यह नहीं जानने के कारण ही तो बेचारे लोग मार खाते हैं।

ऐसा शील हो मुझ में

प्रश्नकर्ता : शील किसे कहें, थोड़ा विस्तार से बताइए न! ऐसे कि सभी की समझ में आ जाए!

दादाश्री : किंचित्मात्र भी दु:ख देने का भाव नहीं हों। खुद के दुश्मन को भी किंचित्मात्र भी दु:ख देने का भाव नहीं हों, उसमें सिन्सियारिटी हो, मॉरालिटी हो, सारे गुण एक साथ हों, किंचित्मात्र भी हिंसकभाव नहीं हो, तब 'शील' कहलाता है। वहाँ पर शेर भी शांत पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहाँ से लाएँगे आजकल के माँ-बाप?

दादाश्री : फिर भी थोड़ा-बहुत, उसमें से 25 प्रतिशत भी हम में होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? लेकिन हम इस काल की वजह से आइस्क्रीम की प्लेटे खाते रहें और ऐसे बन गए।

शीलवान अर्थात् क्या, कि कोई गालियाँ देने आया हो फिर भी वह यहाँ आकर बैठ ही जाए। हम कहें कि, 'कुछ कहिए न,' लेकिन वह एक शब्द भी नहीं बोल पाए। यह है शील का प्रभाव। मतलब हम सामने प्रतिक्रिया की तैयारी करें न, तो शील टूट जाता है। इसलिए तैयारी नहीं करनी चाहिए।

मौन से उत्पन्न होता है चारित्रबल

अगर तू मौन रहे और शांत भाव से देखता रहे, तो तुझ में चारित्रबल उत्पन्न होगा और उसका प्रभाव सामनेवाले पर पड़ेगा, लॉयर (वकील) होगा तब भी। वह चाहे कितना भी डाँटे, तब भी तू दादा का नाम लेना और स्थिर रहना! मन में ऐसा लगेगा कि 'यह कैसी है! यह तो हार ही नहीं रही।' लेकिन फिर वह हार ही जाएगा। उसने किया भी ऐसा ही, ऐसी लड़की थी। दादा जैसे सिखानेवाले मिले तो फिर अब क्या बाकी रहा? वर्ना एडजस्टमेन्ट ऐसा था पहले, रशिया और अमरीका जैसा। वहाँ तो बटन दबाते ही तुरंत सब भस्म हो जाता है, तुरंत ही। क्या यह मानवता

है? किसलिए डरते हो? जीवन किसलिए है? संयोग ही ऐसे हैं तो फिर वह क्या करेगा? लेकिन संयोग ऐसे ही हैं! यह उन्हें जीतने की तैयारी करता है न, इसलिए चारित्रबल 'लूज़' (कमज़ोर) हो जाता है।

'मरकर जीओ' यह सूत्र हृदय में रखो

प्रश्नकर्ता : बेटा व्यवहार में भूल कर रहा हो और अगर हम उसे कुछ न कहें, तब संसार में लोग कहते हैं कि हमें उसे समझाना चाहिए लेकिन हम कुछ कहते ही नहीं। क्योंकि यह ज्ञान लेने के बाद ऐसा समझ में आ जाता है कि यह जो चल रहा है वह एक-दूसरे के कर्म के उदय के कारण चल रहा है। उसमें हम कुछ बदल ही नहीं सकते, तो फिर क्यों कहें कुछ भी।

दादाश्री : ठीक है, 100 परसेन्ट। फिर भी अगर कुछ कह देते हो तो पछतावा करना। गलत है इसलिए पछतावा करो। बाकी, अगर हम नहीं होंगे तब क्या करेगा? वह उदय के अनुसार बरत रहा है। उसका उदय है इसलिए बरत रहा है।

जगत् के लोग तो अगर न बोलें तब भी गलत है। क्योंकि वर्ना उसे पता नहीं चलेगा कि भूल हुई है। ऐसा कुछ कहा हुआ ज़रा भी फलित नहीं होता लेकिन लोग उसे उपदेश समझते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन वहीं गड़बड़ होती है। कुछ भी हो तो ऐसा कहते हैं कि आपको कुछ तो कहना चाहिए न। व्यवहार की खातिर तो कहना चाहिए।

दादाश्री : वे तो कहेंगे और हमें भी कहना है कि 'हाँ, ठीक है, बात तो सही है।' फिर कहना या न कहना वह क्या हमारे हाथ की बात है? न कहा जाए तो उत्तम।

इसलिए श्रीमद् राजचंद्र कहते हैं, 'मरकर जीओ।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है। मैंने तो सभी से कह रखा है कि 'मैं नहीं हूँ' ऐसा ही समझना आप।

दादाश्री : हाँ, जो एक बार मर जाता है उसे वापस मरना नहीं पड़ता लेकिन ऐसा होना चाहिए न, जीते जी मृत! बेटा, अगर पैसे उड़ाए तब भी मृत व्यक्ति क्या करेगा? देखता रहेगा। ऐसा है यह भी, उस तरह से जीवन होना चाहिए।

खुद का कल्याण ही मुख्यधर्म है

बच्चे तो संभले हुए हैं, बच्चों को आप क्या संभालोगे? अपना खुद का कल्याण करना ही मुख्य धर्म है। बाकी ये बच्चे तो संभले हुए ही हैं न! क्या आप बच्चों को बड़ा करते हो? बगीचे में गुलाब के पौधे लगाए हों, तो वे रात में बढ़ेंगे या नहीं? हम समझते हैं कि गुलाब मेरा है, लेकिन गुलाब तो ऐसा ही समझेगा न कि, 'मैं खुद का ही हूँ, किसी का नहीं हूँ।' सभी अपने-अपने स्वार्थ में हैं। हम तो बस पगला अहंकार करते हैं, पागलपन करते हैं।

हम ऐसा नहीं कहते कि साधु बन जाओ। बच्चों को बड़ा करो, बच्चों को संस्कार दो, पढ़ाओ-लिखाओ, सब कुछ करो। लेकिन तुम ऐसा कर लेते हो कि उसके बिना अच्छा ही न लगे! बच्चे के बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। ऐसे कैसे इंसान हो? यह तो ऐसी बात करते हो कि मेरे यहाँ जामुन का पेड़ है इसलिए जामुन के बिना मुझे अच्छा नहीं लगता। यों तो कितने ही पेड़ होते हैं और ये बच्चे, ये तो मनुष्य का अवतार हैं। अगर मनुष्य योनि में आकर मनुष्यपना सार्थक नहीं किया, काम नहीं निकाल लिया, तो फिर तो लौकी जैसा ही हुआ न बेचारा!

ज़रूरत के समय कोई नहीं 'दादा' के अलावा

जब 'बुज़ुर्ग अपनी मर्यादा में रहेंगे तो ही बहू घूंघट में रहेगी,' ऐसा है। कोई आपका नहीं बनेगा, सिर्फ ये दादा ही आपके बनेंगे, जब चाहोगे तब। सुख-दुःख में बाकी कोई आपका नहीं रहेगा, सिर्फ दादा ही आपके रहेंगे, उसकी गारन्टी देता हूँ। ज़रूरत के समय कोई हाज़िर नहीं रहेगा। एक साहब कह रहे थे कि कई जगहों पर घूमा, 20-25 सालों तक तो एक संत के साथ रहा लेकिन जब मेरा समय आया तब अन्य कोई हाज़िर नहीं हुआ, दादा हाज़िर हो गए। चाहे कैसे भी दुःख-सुख के समय हो दादा तुरंत हाज़िर हो जाते हैं और मैं कहता भी हूँ 'घबराना मत।' और कोई हाज़िर नहीं होगा, ये बच्चे-वच्चे कोई भी हाज़िर नहीं होंगे।

ज्ञानी से मिलते हैं उलझनों के खुलासे

प्रश्नकर्ता : दादा, जब से आपके पास आया हूँ, तब से आप मुझे एक शब्दकोश जैसे ही दिखाई देते हैं, डिक्शनरी के जैसे ही। जब हमें कोई उलझन होती है तब आपसे पूछने आते हैं, और तुरंत ही आप उसका खुलासा कर देते हैं।

दादाश्री : हाँ, सारे खुलासे मिलेंगे। 24 तीर्थंकरों का इकट्ठा दर्शन प्राप्त किया हुआ है। जिसकी जो भी उलझन होगी उसका तुरंत हल मिलेगा। उसका ज्ञान पूर्ण रूप से नहीं हुआ है लेकिन दर्शन तो है ही, समझ में आ गया है। केवलज्ञान समझ में आ गया है। जब तक अनुभव में नहीं आया तब तक मैं भी 'दादा भगवान, दादा भगवान' करता रहता हूँ। अगर इतनी ही, यह सब से बड़ी काबिलीयत आ जाए जगत् में, इतनी समझदारी आ जाए न, तो जगत् के लोगों का काम हो गया। खुद की मान्यताएँ सामनेवाले पर नहीं थोप सकते।

प्रश्नकर्ता : दादा, यहाँ पर उलझा हुआ व्यवहार सुलझता है, हल्का महसूस होता है और सभी के चेहरे पर निश्चिंत हास्य रहता है।

दादाश्री : यहाँ दिल है न! और बाहर तो दिल पूरा ही मुरझा गया है। सच्चा धर्म न होने के कारण यह सब हुआ है। धर्म से ही संसार अच्छी तरह से चलता है। बच्चों को संस्कार किस तरह दें, उसकी सूझ धर्म से मिलती है।

हमारे में जैसे गुण होंगे न, बच्चे वैसा ही सीखेंगे। इसलिए हमें ही धर्मिष्ठ बन जाना है। फिर वे हमारा देखकर सीखेंगे।

पूरे परिवार को सुधारती है दादा की खटपट

आजकल के बच्चों को बाहर जाना अच्छा न लगे, घर में हमारा प्रेम, प्रेम और प्रेम ही देखें वैसा कर दो। फिर हमारे संस्कार चलेंगे।

अगर *सुधारना*-(सब्ज़ी काटने को गुजराती में साग सुधारना कहते हैं) हो तो सब्ज़ी *सुधारनी* चाहिए, लेकिन बच्चों को मत सुधारो। लोगों को सब्ज़ी *सुधारना* आता है, सब्ज़ी *सुधारना* नहीं आता क्या?

प्रश्नकर्ता : आता है।

दादाश्री : अरे, सब्ज़ी के इतने बड़े-बड़े टुकड़े काटकर जल्दी से बना लेते हो न।

बेटा साफ दिल का है। अभी साफ है इसलिए उसे यहीं से पुष्टि दो। उसे आनंद वगैरह सब यहीं से मिलेगा। आपसे ही मित्राचारी रहे, बाहर मित्र न ढूँढे। यानी हमें उसके साथ मित्र की तरह रहना चाहिए। मैं तो हाथ फेरता हूँ, खेलता हूँ, सब करता हूँ इसीलिए उसे कॉलेज से छुटकर घर आने का मन करता है। और अगर यहाँ प्रेम नहीं मिलेगा तो बाहर प्रेम ढूँढेगा। इतना

ध्यान रखना कि छोटे बच्चे प्रेम ढूँढते हैं, पैसे नहीं ढूँढते।

इस बच्चे को अंत तक संभालते रहना, इकलौता है न। अब तो अच्छा हो गया है। अब तो कहता है कि यह पूरा जीवन इन दादा के लिए ही है। उससे कहा कि 'भाई, यह करोड़ों की ज़ायदाद पूरी तुझे ही सौंपनी है।' तब कहने लगा 'नहीं, मैं अपना कर लूँगा। आप ये करोड़ों रुपये दादा को दे दीजिएगा।' मैंने कहा, 'नहीं भाई, मुझे नहीं चाहिए।' मैंने मना कर दिया। बेटे को संभालो। बेटा बहुत अच्छा है। इन भाई से यही कहा था न कि 'अपने बच्चों को हमारे पास लेकर आते रहना, भले ही किराया-विराया लगे, फिर भी। बच्चे सुधर गए तो हो गया काम, लाखों रुपये सुधर गए।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि, 'बच्चों को यहाँ ले आओ,' लेकिन अगर बच्चे न आएँ तो?

दादाश्री : जब मुझे घर पर आमंत्रित करते हैं तो दूसरे दिन मैं ज़रा (पिन) लगा देता हूँ। मुझे घर पर बुलाओ या उन्हें पकड़कर ले आओ। इन्डिया में बहुत लोगों को रिपेयर कर दिया है। माँ-बाप खुश हो गए हैं। बहू को भी रिपेयर कर दिया है। बहू के पति को रिपेयर कर दिया, माँ-बाप को रिपेयर कर दिया, वर्ना मोक्ष में कैसे जाएँगे? ज्ञान तो दे दिया लेकिन मोक्ष में कैसे जाएँगे?

अहो ! दादा की कैसी करुणा!

प्रश्नकर्ता : दादा ब्रह्मस्वरूप हो चुके हैं, यह कैसी करुणा है कि ऐसी बातों के लिए भी समय देते हैं?

दादाश्री : हाँ, लेकिन समय देंगे न। देना ही चाहिए। वर्ना लोग इस परेशानी से बाहर कैसे आएँगे? कितनी परेशानी होती होगी? पूरे दिन इसी करुणा का उपयोग होता है, और तभी सामनेवाला उलझन से बाहर निकलेगा तभी इस ज्ञान को पाएगा और तभी राह पर आएगा, वर्ना कैसे आएगा?

कुछ परेशानी तो कम होगी न, मेरे साथ बैठोगे तो? आपको विश्वास आ गया?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : बाद में हल होगी परेशानी क्योंकि हमारा वचनबल है। उसी घड़ी शब्द हाज़िर हो जाते हैं। इसलिए अगर बच्चा पागल सा हो या ऐसा-वैसा हो तो भी ऊब जाने से काम नहीं चलेगा। यह तो अपनी किस्मत में लिखा हुआ है।

इस काल में ऐसे शब्द क्यों लिखे गए? 'अन्सर्टिफाइड फादर्स एन्ड अन्सर्टिफाइड मदर्स'? मैं भी सोच रहा था कि क्या ऐसे शब्द बोलने चाहिए? एक-दो लोगों ने मुझसे कहा भी था कि, 'ऐसा-ऐसा लिखा?' मैंने कहा, 'हाँ लिखा।' पता चल जाए कि ऐसे फादर हो।

आत्मा के साथ सच्चा संबंध, बाकी सब मतलबी

परिणाम समझना चाहिए। अभी बच्चे ही हैं न, बच्चों पर प्रेम रखना है। बच्चा यानी क्या संबंध है, वह समझना है। हर एक के साथ क्या संबंध है, उसे नहीं समझना हैं हमें? जब दाढ़ दु:खती है, तब पता चलता है! कान में दर्द हो, पेट में दर्द हो न तब पता चलता है। इसलिए अतिशय माया मत करना यह फँसाव है। समझकर करना यह सब। मैं आपसे माया छोड़ने के लिए नहीं कह रहा। छोड़ने से छूट जाए ऐसा नहीं है।

लेकिन ज़्यादा माया मत करना, चिंता मत करना। मेरी बात योग्य लगती है न?

सच्चा संबंध किसे कहा जाता है, जो कभी भी न बिगड़े। आत्मा के साथ ही सच्चा संबंध है। बाकी सब मतलब के संबंध है। मतलबी यानी जब तक खुद के काम आए, तब तक संबंधी! मतलब निकालते हैं न! आपसे कोई मतलब नहीं निकालता? यह संसार मतलबी ही है। जहाँ किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं है, वहाँ परमात्मा अवश्य रहते ही हैं। भगवान स्वार्थ से दूर रहते हैं। जब तक कोई भी संसारिक मतलब है, संसारिक इच्छाएँ हैं, तब तक किसी से भी सही बात नहीं कही जा सकती, एक भी सही शब्द नहीं बोला जा सकता।

सब-सब की संभालो

सब सब की संभालो। अपने अपने आत्मा को शांति रहेगी, और मरते समय आत्मा की परिणति अच्छी रहेगी। मरते समय हिसाब आएगा, लेखा-जोखा आएगा। पूरी ज़िंदगी आप ने जो किया था उसका लेखा-जोखा मरते समय आएगा। जैसे कि आज व्यापार करते हैं तो दिवाली के दिन लेखा-जोखा निकालते हैं या दिसम्बर के अंत में निकालते हैं या मार्च के अंत में। लेकिन अंदर जो होगा, फायदा-नुकसान होगा, उसका लेखा-जोखा आएगा न?

पूरी ज़िंदगी का लेखा-जोखा आएगा, वह क्या? चार पैरोंवाला बनेगा या छः पैरोंवाला बनेगा, वह अंदर पता चलता है या दो पैरोंवाला भी बन सकता है। मनुष्य बने या देवता भी बन सकता है, कह नहीं सकते लेकिन जैसा किया होगा, वैसा मिलेगा। इसलिए अपने खुद को संभाल पहले।

यह दुनिया हिसाब चुकाने के लिए ही है। 'जगत् जीव है कर्माधीन, कुछ ना किससे लेना-देना।' अपने-अपने स्वभाव में रहो। यह सब तो अपने-अपने कर्म के अधीन ही घूमते रहते हैं। कोई किसी को कुछ नहीं दे सकता। भगवान भी कुछ नहीं दे सकते, तो बाप क्या दे सकेगा? जिसे संडास जाने की भी शक्ति नहीं है, वह! चीज़ पद्धतिपूर्वक होनी चाहिए कि उसका अंत आ जाए। बात का अंत आना चाहिए न?

आत्मकल्याण हो, ऐसा करो

प्रश्नकर्ता : हम अगर आत्मज्ञान की ओर मुड़े, आत्मदर्शन करें तो फिर क्या बच्चों के मन नहीं बदलेंगे?

दादाश्री : कुछ नहीं बदलेगा। बदलनेवाले होंगे तो बदलेंगे, वर्ना राम तेरी माया। कोई बदलता-वदलता नहीं। हमें खुद बदलने की ज़रूरत है और कोई नहीं बदलेगा। ज़माना बड़ा विचित्र है इसलिए हमें ऐसी भावना रखनी चाहिए कि बेटे-बहू सभी का कल्याण हो लेकिन इतनी ज़्यादा पकड़ मत रखना कि फिर अपना ही बिगड़ जाए। दूर रहकर काम लेना है। इनमें से अपना कोई नहीं बनेगा। सत्युग के लोग अलग थे। ये लोग, ये ऋणानुबंध अलग प्रकार के हैं, वे ऋणानुबंध अलग प्रकार के थे। इसलिए ऐसी आशा रखकर क्या करना है? आप कुछ आत्मा का कल्याण करो न! इसमें क्या स्वाद आएगा?

कलियुग में ऐसी संसारिक आशा मत रखना। कलियुग में कुछ ऐसा करना कि आत्मा का कल्याण हो वर्ना बहुत समय विचित्र आ रहा है। आगे जाकर भयंकर विचित्र आ रहा है। और लगभग 1000 साल अच्छे हैं लेकिन बाद में बहुत भयंकर आनेवाले हैं। फिर कब मौका मिलेगा? इसलिए आप आत्मा का कुछ कर लो।

- जय सच्चिदानंद

ज्ञानी की दृष्टि की निर्दोषता

जब हम संपूर्ण रूप से निर्दोष हो जाएँ तभी सामनेवाला मुझे निर्दोष दिखाई देगा, नहीं तो नहीं दिखेगा। जब तक हम दोषित हैं, तब तक वह दोषित दिखाई देता है। मुझे पूरा जगत् निर्दोष ही दिखाई देता है। मुझे अर्थात् मैं जब दादा भगवान के रूप में रहता हूँ न, तब पूरा जगत् निर्दोष दिखाई देता है और अगर कभी 'अंबालाल' में आ जाऊँ उस समय निर्दोष दिखता ज़रूर है। प्रतिति में रहता है लेकिन कभी शायद आचरण में न भी हो। उस समय आपकी भूल भी निकाल लेता हूँ।

बाकी, अगर हमें निर्दोष ही दिखें तो फिर भूल कहाँ से दिखाई देगी? लेकिन फिर वह तो बाद में हमारा ज़रा धो देते हैं न, तुरंत ही, ऑन द मोमेन्ट तो सबकुछ साफ, क्लियर भी दिखाई देता है बीच में। मैं कहीं आपकी प्रकृति के दोष देखने नहीं आया हूँ, मैं आपकी प्रकृति को देखने आया हूँ। निरीक्षण करने आया हूँ। मैं आपकी प्रकृति और मेरी प्रकृति के, किसी के भी दोष देखने नहीं आया हूँ, मैं तो प्रकृति का निरीक्षण करने आया हूँ। देखने और जानने आया हूँ।

निर्दोषता सहज हो तभी उसे निर्दोष कहा जाएगा, नहीं तो निर्दोष नहीं कहा जा सकता। असहज हुआ अर्थात् दोषित। अब वह जो आगे की बात है कि अपने महात्मा क्या करते हैं? बच्चों को डाँटते हैं, ऐसा सब करते हैं। महात्मा जानते हैं कि 'यह निर्दोष है।' वह भी उनकी *लक्ष* (जागृति) में है, आत्मा के रूप में निर्दोष है लेकिन देह के रूप में नहीं है इसलिए डाँट भी देते हैं। वे कब तक डाँटेंगे? जब तक ऐसा अभिप्राय है कि 'मैं इसे सुधारू,' तभी तक। अत: सुधारने के लिए ऐसा सब करते हैं।

अत: हम दूसरों की प्रकृति को देखते ही रहते हैं। लेकिन जो बिल्कुल नज़दीक रहते हों, इन नीरू बहन जैसे, तो उन्हें ज़रा सुधारने का भाव रह गया है और वह गलत है। कभी हम बोल देते हैं, भूल निकाल बैठते हैं। प्रकृति की भूल नहीं देखनी चाहिए। ज्ञानी उसे कहते हैं... संपूर्ण ज्ञानी अर्थात् भगवान। भगवान किसे कहते हैं कि प्रकृति के दोषों को देखें ही नहीं। हालांकि हम निर्दोष तो देखते हैं। हमें कोई दोषित दिखाई ही नहीं देता, लेकिन थोड़ी सी भी भूल नहीं निकालनी चाहिए किसी की भी। उनके हाथ से हम पर अंगारे भी गिर जाएँ तो भी हमें भूल नहीं दिखनी चाहिए, लेकिन छोटी-छोटी बातों में भूल दिख जाती है कि इनका यह दोष कब निकलेगा, मन में ऐसा भाव आ जाता है लेकिन धकेलने की ज़रूरत ही नहीं है प्रकृति को। प्रकृति अपना रोल अदा किए बिना रहेगी नहीं और ये संसार के लोग क्या करते हैं? सामनेवाले को सुधारते हैं लेकिन वे खुद के सौ खोकर सुधारते हैं उसे। लेकिन उनके बाप ने भी सौ खोए थे और तभी जाकर ये सुधरे थे।

ये जो सौ गँवाए, सौ खोकर बच्चे को सुधारा तो उसने वे आत्मा के सौ खोए। एक व्यक्ति तो ऐसा कह रहा था, 'समझता नहीं है, मैं तेरा बाप हूँ!' अरे घनचक्कर, कैसा पैदा हुआ है तू! ऐसा बोला! और वह भी कॉलेजियन बेटे से! अरे, कैसा फादर है! फिर मैंने बहुत डाँटा था। वह भी उसे समझाने के लिए कि 'अरे, क्या बच्चे के साथ ऐसे बात करनी चाहिए? आपकी क्या दशा होगी?' लेकिन हम तो ऐसे ज्ञानी हैं, हमें ऐसा सब नहीं कहना चाहिए! हमें तो निर्दोष दिखते हैं हंड्रेड परसेन्ट, उसमें दो मत हैं ही नहीं। पूरे जगत् के जीवमात्र निर्दोष दिखते हैं, हमें बिल्कुल भी दोषित नहीं दिखाई देते, आपको भी दोषित नहीं दिखाई देते लेकिन इसमें आपके दोष डिस्चार्ज रूप से बरतते हैं। अगर दोषित दिखे तो द्वेष रहा और जो द्वेष है उसे निकालना पड़ेगा।

(परम पूज्य दादाश्री की वाणी में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

1-6 अप्रैल : लंदन - हेरो में पहले दिन विशेष तौर पर अंग्रेजी में सत्संग आयोजित हुआ। परम पूज्य दादा भगवान की पुस्तक 'आत्म साक्षात्कार' पढ़कर विविध जगहों से लोग आए थे। वहाँ उपस्थित लगभग 600 महात्मा-मुमुक्षुओं में बहुत सारे युवा थे, जिन्होंने सत्संग और सेवा में हिस्सा लिया। दूसरे दिन पूज्य श्री और आप्तपुत्र द्वारा अंग्रेजी और गुजराती भाषा में सत्संग हुआ।

स्थानीय महात्माओं द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजित की गई, जिसमें आत्मा निगोद में से एक इन्द्रिय, एक इन्द्रिय में से दो इन्द्रिय, इस तरह पाँच इन्द्रिय तक किस तरह पहुँचता है और आत्मा को पंचेन्द्रिय तक पहुँचने के बाद यदि उसे आध्यात्मिक प्रगति करनी हो तो ज्ञानी की अति आवश्यकता है, ऐसा दर्शाया गया था। प्रदर्शनी में यह भी बताया गया था कि अक्रम विज्ञान पंचेन्द्रिय जीवों को मोक्ष मार्ग में प्रगति करने के लिए किस तरह सहायक है। सत्संग में आए हुए सभी मुमुक्षुओं व महात्माओं ने प्रदर्शनी देखी और उससे संबंधित प्रश्न भी पूछे। GNC के बच्चों द्वारा GNC की प्रवृत्तियों को दर्शाती एक प्रदर्शनी आयोजित हुई जिसमें आरती और प्रार्थना के महत्व को समझाया गया। 30 बच्चों ने इसमें हिस्सा लिया था। 3 अप्रैल को आयोजित ज्ञानविधि में 270 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। अंतिम दिन आप्तपुत्र द्वारा नए महात्माओं के लिए सत्संग आयोजित हुआ।

5 अप्रैल को स्थानिक सेवार्थियों के लिए एक दिवसीय पिकनिक का आयोजन हुआ। पिकनिक में पूज्य श्री के सानिध्य में फोटो सेशन और सत्संग का आयोजन हुआ। बच्चों ने पूज्य श्री से पहेलियाँ पूछीं। 6 अप्रैल को राइस्लीप सेन्टर में महात्माओं को व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिल सके इस हेतु से दादा दरबार का आयोजन हुआ।

7-15 अप्रैल : इस साल भी जर्मनी में विलिंगन में 'अक्रम विज्ञान इवेन्ट' का आयोजन हुआ था जो सुविधाजनक और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है। यूरोप और अन्य खंडों के विविध देशों से महात्माओं व मुमुक्षुओं ने इस इवेन्ट में हिस्सा लिया। लगभग 600 शिविरार्थी हाज़िर थे। पहले दिन सुबह के सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 233 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री द्वारा जर्मन भाषा में अनुवादित पुस्तकों मृत्यु, माँ-बाप बच्चों का व्यवहार(सं), साइन्स ऑफ स्पीच पुस्तकों और 2 दादावाणियों का विमोचन किया गया। इवेन्ट के दौरान शिविरार्थियों के लिए दर्शन, भक्ति-गरबा, मूर्ति विधि, पिकनिक वगैरह कार्यक्रम आयोजित हुए। अंतिम दो दिनों में अंग्रेजी पुस्तक 'साइन्स ऑफ कर्मा' पर पारायण हुआ। पूज्य श्री ने विविध उदाहरण देकर जर्मन महात्माओं द्वारा 'कर्म की थ्योरी' पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए।

सेवार्थियों के लिए स्पेशल टूर का आयोजन किया गया। टूर के दौरान पूज्य श्री और महात्मा एक केथेड्रल चर्च देखने गए, जहाँ पर पूज्य श्री ने विधि और जगत् कल्याण के लिए प्रार्थना करवाई। ताज्जुब की बात तो यह है कि पूज्य नीरू माँ भी इस चर्च में आ चूके थे और उन्होंने भी इस तरह विधि और जगत् कल्याण के लिए प्रार्थना करवाई थी।

16-18 अप्रैल : पूज्य श्री जब जर्मनी से मेन्चेस्टर पहुँचे तब स्थानीय महात्माओं ने एयरपॉर्ट पर पूज्य श्री का हार्दिक स्वागत किया। बोल्टन सत्संग में भी नए मुमुक्षु दिखाई दिए। सत्संग में माँ-बाप बच्चों के व्यवहार पर प्रश्न पूछे गए और पूज्य श्री से संतोषजनक जवाब भी पाए। 17 अप्रैल को आयोजित ज्ञानविधि में 100 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। नए महात्माओं के लिए आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग आयोजित हुआ जिनमें कई महात्माओं ने अपने ज्ञान के अनुभव बताए। स्थानीय सेवार्थियों के लिए एक दिवसीय पिकनिक भी आयोजित की गई। पूज्य श्री के सानिध्य में महात्मा एक पुरानी टैक्सटाइल मिल देखने गए जिसकी स्थापना 18वीं सदी में हुई थी जो अब एक म्यूज़ियम में तब्दील की गई है।

22-24 अप्रैल : दिनांक 20 को लेस्टर की पिकनिक में पूज्य श्री के सानिध्य में लगभग 150 महात्मा किंग रिचार्ड-3 म्यूज़ियम देखने गए थे। व्यक्तिगत मार्गदर्शन हेतु दिनांक 21 को दादा दरबार का आयोजन हुआ।

दिनांक 22 को पूज्य श्री के सत्संग में लगभग 400 महात्माओं व मुमुक्षुओं से पूरा हॉल खचाखच भर गया था। लेस्टर सेन्टर के GNC के बच्चों द्वारा नीरु माँ का अंतिम संदेश 'प्रेम से रहना...प्रोमीस' विशिष्ट तरीके से दिखाया गया। जिन बच्चों ने इसमें हिस्सा लिया था, उन सभी ने अपना व्यक्तिगत ध्येय लिखकर दिया और यह भी बताया की उसे वे अपने जीवन में कैसे आचरण में लाएँगे। GNC टीम ने केक बनाकर उस पर 'शांति का दूत' लिखकर पूज्य श्री को अर्पण किया।

दिनांक 23 को सुबह आप्तपुत्र द्वारा अंग्रेजी में सत्संग किया गया और शाम को पूज्य श्री का सत्संग था जिसका लगभग 600 लोगों ने लाभ लिया। ज्ञानविधि में 156 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया।

25 अप्रैल : यू.के. लंदन के सेवार्थियों के बीच आपस में प्रेम और अभेदता बढ़े और पूज्य श्री का सानिध्य प्राप्त हो इस हेतु से समूह भोज का आयोजन हुआ। 180 सेवार्थियों ने इसका लाभ लिया। सेवा के दौरान होनेवाले कषायों के सामने किस तरह की जागृति रखनी चाहिए और कैसे निबेड़ा लाना चाहिए, उसके लिए सत्संग में पूज्य श्री ने सेवार्थियों को चाबियाँ दी। भोजन के बाद भक्ति हुई और उसके बाद एडवान्स में पूज्य श्री का 64वाँ जन्मदिन मनाया गया।

26 अप्रैल : पूज्य श्री ने यू.के. से भारत की ओर प्रस्थान किया।

5-9 मई : पिछले साल PMHT शिविर को बहुत अच्छा रिस्पोन्स मिलने की वजह से इस साल भी पाँच दिनों के लिए PMHT शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 2 दिन 'पति-पत्नि का दिव्य व्यवहार,' 2 दिन 'माँ-बाप बच्चों के व्यवहार,' और एक दिन 'पैसों का व्यवहार' पर सत्संग प्रश्नोत्तरी हुए। ग्रंथ पर पारायण के अलावा महात्माओं ने पूज्य श्री के समक्ष खुद के दैनिक जीवन की समस्याएँ बताकर समाधान प्राप्त किए। इसके अलावा इन्हीं विषयों पर स्पेशल सत्संग की वीसीडी, लाइव सामायिक, नाटक और आप्तपुत्र-पुत्रियों द्वारा ग्रूप सत्संग हुए। इन सभी सत्संग और सामायिक की वजह से महात्माओं को ज्ञान को समझने में आसानी हुई। लगभग 6000 महात्माओं ने इस शिविर का लाभ उठाया।

9 मई : शाम को पूज्यश्री के 64वें जन्मदिन का महोत्सव, दादानगर संकुल में 10 हज़ार महात्माओं की उपस्थिति में मनाया गया। पूज्य श्री ने सामूहिक रूप से सभी महात्माओं को वंदन करके उनसे आशीर्वाद लिए। उसके बाद केक काटकर स्वामी-दादा-नीरू माँ को प्रसाद अर्पण किया। इस अवसर पर GNC के बच्चों द्वारा सुंदर नृत्य पस्तुत किया गया। पूज्य श्री की अखंड तंदुरुस्ती और दीर्घायु के लिए शाम को 4-5 एक घंटे के लिए कीर्तन भक्ति की गई।

12-16 मई : अहमदाबाद शहर के बहुत तेज़ी से विकसित हो रहे निकोल एरिया में पूज्य श्री के सानिध्य में सत्संग-ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। पहले दिन के सत्संग में स्थानीय महात्माओं ने अपने प्रश्नों का समाधान पाया। और बाकी के 2 दिनों में पहले तो पूज्य श्री ने 'विघ्नकारक ग्रह कौन से?' और 'भाव और क्रिया' विषयों पर सत्संग किया और उसके बाद मुमुक्षुओं ने अपने प्रश्नों के समाधान पाए। ज्ञानविधि में 1010 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग के दौरान लगभग 500 सेवार्थियों ने पूज्य श्री के सत्संग व दर्शन का लाभ पाया।के समाधान पाए। ज्ञानविधि में 1010 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थी सत्संग के दौरान लगभग 500 सेवार्थियों ने पूज्य श्री के सत्संग व दर्शन का लाभ पाया।

विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता
दिल्ली	(17 जुलाई)	सुबह 9 से 2	शाह ओडिटोरीयम, गुजराती समाज के पास, सिविल लेन, काश्मिरी गेट मेट्रो स्टेशन के सामने. 9810098564
जालंधर	(17 जुलाई)	सुबह 10 से 2	C/O ईगल प्रकाशन कोम्पलेक्ष, सेन्ट्रल मिल कम्पाउन्ड, पुरानी रेल्वे रोड. 9814063043
गाज़ियाबाद	(19 जुलाई)	सुबह 10 से 2-30	हाउस नं. 17E/227, सेक्टर-17, कोनार्क एवन्यु, वसुंधरा. 9968738972
चंडीगढ़	(17 जुलाई)	शाम 4 से 8	सनातन धर्म मंदिर (धर्मशाला),सेक्टर-32 D 9872188973
जयपुर	(17 जुलाई)	दोपहर 2 से 5	श्री अचलेश्वर महादेव मंदिर, रमनगर शोपींग सेन्टर, शास्त्री नगर. 9785891606
पाली	(19 जुलाई)	शाम 4-30 से 7-30	मेवाडा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी, कोलेज रोड. 9461251542
अजमेर	(19 जुलाई)	शाम 6 से 8-30	हउस नं.349/49 भवानी ट्यूशन सेन्टर लेन के पास, कल्पवृक्ष मंदिर के पास, लोहाखान, अजमेर 9460611890
कोलकाता	(17 जुलाई)	सुबह 9-30 से 4	श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर, 42, शरत बोस रोड. 9830080820
धनबाद	(19 जुलाई)	शाम 5-30 से 8	UG A आर.के. एपार्टमेन्ट, रिलायन्स स्टोर के पीछे, कटरास रोड, बेंक मोड. 9431191375
पटना	(10 जुलाई)	सुबह 10 से 5	जैन भवन, गोबिंद मित्रा रोड, पटना. 7352723132
कानपुर	(17 जुलाई)	शाम 4 से 8	124/172 C-ब्लोक, गोविंद नगर, कानपुर. 9452525981
वाराणसी	(17 जुलाई)	शाम 4 से 7	उत्सव वाटिका, गुरुबाग, लाक्षा रोड. 9795228541
इन्दौर	(17 जुलाई)	शाम 4 से 7-30	खंडेलवाल धरमशाला, मौलाना आजाद मार्ग, लोहार पट्टी, मालगंज चौराहे के पास 9039936173
दमोह	(19 जुलाई)	शाम 4 से 6	दादा भगवान परिवार सेन्टर, वैशाली नगर, दमोह. 9926985853
अंजड़	(17 जुलाई)	सुबह 8 से 11	अन्नपूर्णा नगर, पाटीदार समाज. 9617153253
भोपाल	(19 जुलाई)	शाम 4 से 8	जनकविहार कोम्प्लेक्ष, मालवियानगर. 9425024405
जबलपुर	(19 जुलाई)	दोपहर 3 से 7	समदरिया मोल, सिविक सेन्टर, चौथी मंजिल. 9425160428
रायपुर	(19 जुलाई)	शाम 5 से 8	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, तेली भवन के पीछे, अश्वनी नगर. 8889944333
भिलाई	(19 जुलाई)	सुबह 10 से 5	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास. 8349545600
मुंबई	(17 जुलाई)	शाम 4 से 8	हालारी विशा ओशवाल समाज वाडी, दादा साहेब फालके रोड, दादर(से.रे.) 9323528901
पूणे	(17 जुलाई)	सुबह 10 से 5-30	होटेल गोल्डन ईमराल्ड, गुल टेकडी, मार्केट यार्ड. 7218473468

अमरावती	**(17 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 1	दोशी वाडी, बडे राजेस सिनेमा के पास, जय स्तंभ चौक. 9403411471
औरंगाबाद	**(19 जुलाई)**	शाम 6 से 9	''निमिषा बंगलो', पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, पुलीस कमिश्नर रोड. 8308008897
नागपुर	**(17 जुलाई)**	सुबह 9-30 से 11-30	श्री नागपुर कच्छी विशा ओशवाल समाज, 57/58 अनाथ विद्यालय गृह लेआउट, लकडगंज. 9970059233
जलगाँव	**(19 जुलाई)**	शाम 4 से 7	प्लोट नं-12, गणपति नगर, रोटरी होल पास, 9420942944
नासिक	**(17 जुलाई)**	सुबह 11 से 1	भजन होल, मुक्तिधाम मंदिर, बिट्को पोईन्ट, नासिक रोड 9021232111
बेंगलोर	**(19 जुलाई)**	सुबह 9 से 12	महाराष्ट्र मंडल, दुसरा क्रोस, गांधीनगर. 9590979099
हैदराबाद	**(17 जुलाई)**	**समय और स्थल की जानकारी के लिए संपर्क करे**	9885058771
हुबली/बेलगाम	**(22 जुलाई)**	शाम 3 से 6	पाटीदार भवन, गणेश मार्ग, शास्त्री नगर, बेलगाम 9945894202
चेन्नई	**(19 जुलाई)**	दोपहर 3 से 6	बी-7, केन्ट एपार्ट. 26 रीथर्डन रोड. 9380159957

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

नवादा **दिनांक :** 8 जुलाई **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 7654057901
स्थल : केवट कुटीर, विद्युत कार्यालय के सामने, गया रोड, नवादा.

बख्तियारपुर **दिनांक :** 9 जुलाई **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9470083078
स्थल : देवकीनारायण कुंज, श्रीघाट मंदिर गल्ली, बख्तियारपुर.

वैशाली **दिनांक :** 11 जुलाई **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9708234981
स्थल : ग्राम जटकौली, पोस्ट ओफिस - धरमपुर, वैशाली

मुजफ्फरपुर **दिनांक :** 12 जुलाई **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9939540790
स्थल : मयुर कान्फरन्स हाल, ICICI बेंक के पीछे, सिन्हा कोम्पलेक्ष, क्लब रोड, रामना, मुजफ्फरपुर.

पूर्णिया **दिनांक :** 14 जुलाई **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9546817581

कटिहार **दिनांक :** 15 जुलाई **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 7759929535

गुवाहाटी **दिनांक :** 18 जुलाई **समय जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9435558135
स्थल : हाउस नं.17, बिष्नु कोम्पलेक्ष, नलिनीबाला देवी पथ, श्री नगर, गुवाहाटी.

गुवाहाटी **दिनांक :** 19 जुलाई **समय और स्थल की जानकारी के लिए** **संपर्क :** 9435558135

गोवा **दि.** 11 सितम्बर **संपर्क :** 8698745655
बेलगाम **दि.** 12 सितम्बर **संपर्क :** 9945894202
बेलगाम **दि.** 13 सितम्बर **संपर्क :** 9945894202
हुबली **दि.** 14 सितम्बर **संपर्क :** 9739688818
हुबली **दि.** 15 सितम्बर **संपर्क :** 9739688818
हैदराबाद **दि.** 16 सितम्बर **संपर्क :** 9885058771
बेंगलोर **दि.** 17 सितम्बर **संपर्क :** 9590979099
बेंगलोर **दि.** 18 सितम्बर **संपर्क :** 9590979099
चेन्नई **दि.** 19 सितम्बर **संपर्क :** 9380159957

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2016

Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
29-Jun	Wed	Houston, TX	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Vallabh Preeti Seva Samaj Hall (VPSS) 11715 Bellfort Village Dr, Houston, TX 77031	Ext. 1013 houston@ us.dadabhagwan.org
30-Jun	Thu	Houston, TX	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
30-Jun	Thu	Houston, TX	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
1-Jul	Fri	Houston, TX	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
2-Jul	Sat	Dallas, TX	Satsang	4-30 PM	7-00 PM	D/FW Hindu Temple Society 1605 N. Britain Road Irving, TX 75061	Ext. 1026 dfw@ us.dadabhagwan.org
3-Jul	Sun	Dallas, TX	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
3-Jul	Sun	Dallas, TX	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
4-Jul	Mon	Dallas, TX	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
7-Jul	Thu	New York	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM	TBA	TBA
8-Jul	Fri	New Jersey	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Edison Hotel 3050 Woodbridge Avenue, Edison, NJ 08837 (GPS Address 1173 King George Post Rd) Edison, NJ 08837)	Ext. 1020 newjersey@ us.dadabhagwan.org
9-Jul	Sat	New Jersey	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
10-Jul	Sun	New Jersey	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
10-Jul	Sun	New Jersey	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
11-Jul	Mon	New Jersey	Aptaputra Satsang	7-00 PM	9-30 PM		
15-Jul	Fri	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM	Sheraton Parkway Toronto North Hotel & Suites Address: 9005 Leslie St, Richmond Hill, ON L4B 1B2, Canada	Ext 10 gp@ us.dadabhagwan.org
15-Jul	Fri	Toronto, Canada	SATSANG	4-30 PM	7-00 PM		
16-Jul	Sat	Toronto, Canada	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
16-Jul	Sat	Toronto, Canada	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
17-Jul	Sun	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM		
17-Jul	Sun	Toronto, Canada	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
18-Jul	Mon	Toronto, Canada	GP Shibir	9-30 AM	12-00 PM		
18-Jul	Mon	Toronto, Canada	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
19-Jul	Tue	Toronto, Canada	GP Day	9-30 AM	12-00 PM		
19-Jul	Tue	Toronto, Canada	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		
20-Jul	Wed	Toronto, Canada	GP SHIBIR	9-30 AM	12-00 PM		
26-Jul	Tue	Florence, AL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Ralph C Bishop Community Center 201 S. Washington Ave Russellville, AL 35653	Ext 1033 florence@ us.dadabhagwan.org
27-Jul	Wed	Florence, AL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
27-Jul	Wed	Florence, AL	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
28-Jul	Thu	Florence, AL	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
29-Jul	Fri	Atlanta, GA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Gujarati Samaj 5331 Royalwood parkway, Tucker, GA , 30084	Ext. 1011 atlanta@ us.dadabhagwan.org
30-Jul	Sat	Atlanta, GA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
31-Jul	Sun	Atlanta, GA	Gnanvidhi	3-30 PM	7-30 PM		
5-Aug	Fri	Chicago, IL	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Swaminarayan Temple@ 1020 Bapa Rd, Streamwood, IL 60107	Ext. 1005 chicago@ us.dadabhagwan.org
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM	Swaminarayan Temple @ 21W Irving Park Rd, Itasca, IL 60143	
6-Aug	Sat	Chicago, IL	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		
7-Aug	Sun	Chicago, IL	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
9-Aug	Tue	Los Angeles, CA	Satsang	7-00 PM	9-30 PM	Sanatan Dharma Temple 15311 Pioneer Blvd. Norwalk CA 90650	Ext. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
10-Aug	Wed	Los Angeles, CA	Gnanvidhi	5-00 PM	9-00 PM		
11-Aug	Thu	Los Angeles, CA	Aptaputra Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
12-Aug	Fri	San Jose, CA	Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Oasis Palace 35145 Newark Blvd Newark, CA 94560	Ext. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org
13-Aug	Sat	San Jose, CA	Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Aptaputra Satsang	10-00 AM	12-00 PM		
14-Aug	Sun	San Jose, CA	Gnanvidhi	4-00 PM	8-00 PM		

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर सोम से शनि रात 10-20 से 10-40 (हिन्दी में)
- **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा शाम 6-30 से 7 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-गिरनार** हर रोज़ पर सुबह 9 से 9-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ शाम 5 से 5-30 (गुजराती में)

USA
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शुक्र सुबह 8-30 से 9, शनि सुबह 9 से 9-30 , रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर मंगल से गुरु रात 10 से 10-30, शुक्र से रवि रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात 8-30 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)

USA
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 EST (हिन्दी में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

Singapore
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 4-30 से 5 तथा सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)

Australia
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 तथा सुबह 10 से 10-30 (हिन्दी में)

New Zealand
- **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 9-30 से 10 तथा रात 12 से 12-30 (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात 10 से 10-30

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

रक्षाबंधन का कार्यक्रम निश्चित होने पर अगले अंको में जानकारी दी जाएगी।

20 अगस्त (शनि) शाम 4 से 7 - **सत्संग** तथा **21 अगस्त** (रवि), दोपहर 4-30 से 7 - **ज्ञानविधि**

25 अगस्त (गुरु) रात 10 से 12 - **जन्माष्टमी** के अवसर पर विशेष भक्ति का कार्यक्रम

28 अगस्त (रवि) सुबह 9 बजे से - **पूज्यश्री के दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

29 अगस्त से 5 सितम्बर (सोम से सोम) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी 13 (पू.)** पर **वांचन-सत्संग**

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह 9 से 12 तथा 3 से 6 के दौरान) पर दि. 7 अगस्त 2016 तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-13 (पू.) (गुजराती) पर वाचन और उसी विषय पर सत्संग होगा। गुजराती नहीं समज सकते उनके लिए रेडियो सेट द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल एफएम सुविधावाला है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते है।)

3) ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ।

4) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

ओस्ट्रेलिया - न्यूजीलेन्ड सत्संग दि. 7 से 30 सितम्बर 2016

ओस्ट्रलिया संपर्क : + 61 421127947, न्यूजीलेन्ड संपर्क : + 64 210376434

अगले अंको में सत्संग की जानकारी विस्तार से प्रकाशित की जाएगी।

पूणे

21 अक्तूबर (शुक्र), शाम 5-30 से 8-30 - **महात्माओं के लिए विशेष सत्संग**

22 अक्तूबर (शनि), शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** तथा **23 अक्तूबर** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

स्थल : गणेश कला क्रिडा मंच, नेहरु स्टेडियम केम्पस, स्वारगेट बस स्टेशन के पास. **संपर्क :** 7218473468

24 अक्तूबर (सोम), शाम 5-30 से 8-30 - **आप्तपुत्र सत्संग, स्थल के लिए संपर्क :** 7218473468

परम पूज्य दादा भगवान का 109वाँ जन्मजयंती महोत्सव - वलसाड शहर में

उद्घाटन समारोह : 9 नवम्बर, **सत्संग शिविर :** दि. 10 से 12 नवम्बर

ज्ञानविधि : दि. 12 नवम्बर, **जन्मजयंती :** दि. 13 नवम्बर

स्थल : आई.पी. गांधी हाईस्कूल के सामने, वांकी नदी के पास, जुजवा गाँव, वलसाड-धरमपुर रोड.

संपर्क : 9924343245

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,

अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830093230

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

June 2016
Year-11 Issue-8
Continuous Issue-128

Dadavani

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJENG/2006/17257
Reg. No. GAMC - 1501/2015
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/100/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

Know the art of Living Life

What is our definition of family? It is indeed an exact family, but you do not know how to live life with the family. The forefathers have not taught anyone how to live life! And things only function the way one knows; aimlessly. It should not function like that; it should function with understanding. One's family life should function beautifully! In general, you learned everything, but should you not first learn how to interact with your wife? Likewise, how to interact with children? Therefore, with the wife, with the children, the first thing one needs to improve is that peace and contentment should prevail within the family. There should be no interference within one's family. Is it acceptable to scold here, in the home? This is considered one family and such things would not suitable.

- Dadashri

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.